الهندية
हिन्दी

مترجم لعدة لغات

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

सहीह दुआएँ
और सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा

डॉ. अब्दुल्लाह बिन हमूद अल-फ़ुरैह़

د. عبدالله بن حمود الفريح

- दुआ के शिष्टाचार
- सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति
- क़ुरआन की दुआएँ
- नमाज़ की दुआएँ
- नबवी दुआएँ
- अल्लाह का शरण लेने की नबवी दुआएँ
- रुक़्या (झाड़-फूँक) की दुआएँ
- सुबह और शाम की दुआएँ

प्रत्येक विषय पर क्लिक करें
उससे संबंधित अज़कार एवं दुआओं पर
जाने के लिए

doa.eqtidaa.com

بسم الله الرحمن الرحيم

प्राक्कथन

हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए योग्य है। अल्लाह की दया एवं शांति अवतिरत हो उसके सम्मानित रसूल, तथा आपके परिवार और सभी साथियो पर। यह एक अच्छी किताब है, जिसमें कई तरह की व्यापक दुआएँ (अल्लाह सर्वशक्तिमान की प्रशंसा, क़ुरआन की दुआएँ, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआएँ, अल्लाह का शरण लेने की नबवी दुआएँ, शरई रुक़्या (दम, झाड़-फूँक) तथा सुबह और शाम की दुआएँ) और साथ ही दुआ के शिष्टाचार का उल्लेख है। मैंने केवल प्रमाणित दुआओं का चयन करने का

ख्याल रखा है; ताकि मुसलमान उसी तरह दुआ करने का प्रयास करे जैसे किताब और सुन्नत में वर्णित है, जिन दुआओं में ढेर सारी भलाइयाँ समाहित हैं। प्रत्येक दुआ को अरबी भाषा में लिखा गया है और (हिंदी भाषा) में उसका अनुवाद और उच्चारण लिखा गया है। मैंने दुआओं की हदीसों की प्रामाणिकता के हवालों (संदर्भ) का उल्लेख किताब के अंत में किया है। मैं अल्लाह सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूँ कि इस कार्य को अपने लिए ख़ालिस बनाए। तथा अल्लाह, हमारे नबी मुहम्मद और आपके परिवार और सभी साथियों पर दया और शांति अवतरित करे।

डॉ. अब्दुल्लाह बिन हमूद अल-फ़ुरैह़

दुआओं से पहले

- ऐ मुसलमान! तू अपने पालनहार का मुहताज है ... उस महिमावान् के साथ बेनियाज़ है।
- आपको कुछ परंपरागत दुआएँ समर्पित हैं ... अपने दिल के साथ उनके लिए तैयार हो जाएँ ...
- ये हर भलाई के लिए समावेशी दुआएँ हैं
- इनमें से जितना हो सके आप याद कर लें
- चुनाँचे कितनी दुआएँ हैं, जो आपकी हर जरूरत के लिए पर्याप्त हैं
- क्योंकि इन दुआओं के शब्द थोड़े, अर्थ व्यापक हैं
- इनके साथ आपके लिए केवल आपके दिल की उपस्थिति और अपने पालनहार के प्रति समर्पण की कमी है ...

दुआ के शिष्टाचार

पहला : दुआ करने वाले को चाहिए कि विशुद्ध रूप से अल्लाह सर्वशक्तिमान से दुआ करे और निश्चित रूप से यह जान ले कि एकमात्र अल्लाह ही उसकी दुआ को स्वीकार करने में सक्षम है। इसलिए वह अल्लाह सर्वशक्तिमान के अलावा किसी अन्य से दुआ न करे और उसके अलावा किसी और का वसीला न पकड़े, चाहे वह कोई नबी, या कोई सदाचारी, या फ़रिश्ता, या नेक बंदा, या कोई भी हो। अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿فَٱدۡعُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ﴾ [غافر: ١٤]

"अतः तुम अल्लाह को, उसके लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए पुकारो।" [सूरत गाफ़िर : 14]

दूसरा : आपको यह याद रखना चाहिए कि आपका दुआ में व्यस्त होना अपने आप में एक महान उपासना है, जिससे सर्वशक्तिमान अल्लाह प्यार करता है, तथा दुआ के क़बूल होने से क़त-ए-नज़र, आपको उसपर सवाब मिलेगा।

तीसरा : आपको अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए और यह कि वह आपकी दुआ को कबूल करने में सक्षम है, और यह कि आपको किसी ऐसे प्राणी की निकटता तलाशने की आवश्यकता नहीं है जो आपको अल्लाह तआला से निकट कर दे, और इसी तरह की अन्य बिदअतें (नवाचार), जिनके कारण मुसलमान अवैध वसीला पकड़ने का शिकार बन सकता है।

चौथा : अल्लाह सर्वशक्तिमान आपके

पश्चाताप करने और उसकी ओर ध्यानमग्न होने से ख़ुश होता है, चाहे आप अपने पापों के कारण कितना ही दूर क्यों न हों। इसलिए आप इस बात से सावधान रहें कि आपके मन में दुआ की स्वीकृति के असंभव होने या उसकी दया से निराश होने की बात आए। बल्कि आप इस बात को अपने सामने रखें कि वह आपकी तौबा से तथा आपके उसकी ओर मुतवज्जेह होने से ख़ुश होता है। आप उसके इस कथन को समाने रखें :

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَغۡفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًاۚ﴾ [زمر: ٥٣]

"निःसंदेह अल्लाह सभी पापों को क्षमा कर देता है।" तथा इस फरमान को :

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌۖ أُجِيبُ دَعۡوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِۖ﴾ [بقره: ١٨٦]

"और जब मेरे बंदे आपसे मेरे बारे में पूछें, तो

निःसंदेह मैं क़रीब हूँ, मैं पुकारने वाले की दुआ क़बूल करता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है।"

पाँचवाँ : दुआ करने वाले का खाना-पीना ह़राम कमाई से नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह दुआ क़बूल होने की बाधाओं में से है। इसलिए कि अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि : "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे आदमी का उल्लेख किया जो लंबी यात्रा करता है, इस हाल में कि उसके सिर के बाल बिखरे हुए और कपड़े धूल भरे होते हैं, फिर वह अपने हाथों को आसमान की ओर उठाकर कहता है :

«الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشْعَثَ أَغْبَرَ، يَمُدُّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ، يَا رَبِّ، يَا رَبِّ، وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ، وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ، وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ، وَغُذِيَ بِالْحَرَامِ، فَأَنَّى يُسْتَجَابُ لِذَلِكَ؟»:

ऐ मेरे पालनहार! ऐ मेरे पालनहार! हालाँकि

उसका खाना हराम है, उसका पीना हराम है और उसके कपड़े हराम हैं, और उसका पोषण हराम से हुआ है। तो फिर उसकी दुआ कैसे क़बूल हो सकती है।” इसे मुस्लिम (हदीस संख्या : 1015) ने रिवायत किया है।)

छठा : दुआ करने वाले को दुआ के शिष्टाचार और सुन्नतों का पालन करना चाहिए, जो निम्नलिखित हैं :

1. वह पवित्रता की स्थिति में दुआ करे, चुनाँचे जिस तरह वह नमाज़ के लिए वुज़ू करता है, उसी तरह वुज़ करे।

इसका प्रमाण सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम में अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है, जिसमें उनकी अपने चाचा अबू आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ की एक

घटना का उल्लेख है। उस हदीस में है कि अबू आमिर ने अबू मूसा को वसीयत की, कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनके लिए दुआ करने का अनुरोध करें। फिर अबू मूसा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसके बारे में सूचित किया :

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ، أَبِي عَامِرٍ»

"तो अल्लाह के रसूल ने पानी मंगवाया और उससे वुज़ू किया। फिर अपने दोनों हाथ उठाए और कहा : "ऐ अल्लाह! उबैद अबू आमिर को क्षमा कर दे।" यहाँ तक कि मैंने आपके दोनों बग़लों (कांख) की सफेदी देखी, फिर आपने कहा :

«اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَوْقَ كَثِيرٍ مِنْ خَلْقِكَ، أَوْ مِنَ النَّاسِ»:

"ऐ अल्लाह! उसे क़ियामत के दिन अपनी

बहुत-सी मख़्लूक़ या लोगों के ऊपर कर दे।" बुख़ारी (हदीस संख्या : 4323), मुस्लिम (हदीस संख्या : 2498).

2 वह क़िबला की ओर मुँह करे।

3 वह दोनों हाथों को उठाए।

इन दोनों सुन्नतों का प्रमाण अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है, उन्होंने कहा : "मुझे उमर बिन अल-खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया : "जिस दिन बद्र की लड़ाई हुई, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों को देखा कि वे एक हज़ार हैं, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी तीन सौ उन्नीस हैं। तो अल्लाह के नबी ने क़िबला की ओर मुँह किया, फिर अपने दोनों हाथ फैलाए और अपने पालनहार को पुकारने लगे :

«اللَّهُمَّ أَنْجِزْ لِي مَا وَعَدْتَنِي، اللَّهُمَّ آتِ مَا وَعَدْتَنِي»:

"ऐ अल्लाह! उसे पूरा कर दे, जो तू ने मुझसे वादा किया है। ऐ अल्लाह! जो तूने मुझसे वादा किया है, उसे प्रदान कर दे.." इसे मुस्लिम (हदीस संख्या : 1763) ने रिवायत किया है।

4 वह अपनी दुआ की शुरुआत अल्लाह सर्वशक्तिमान की प्रशंसा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद के साथ करे। इसलिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी फ़ज़ाला बिन उबैद की हदीस है, वह कहते हैं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को अपनी नमाज़ में दुआ करते हुए सुना, उसने अल्लाह की महिमा का गान नहीं किया, और न ही

उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा। तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : «عَجِلَ هَذَا»: –“इसने जल्दी की।” फिर आपने उसे बुलाया और उससे कहा :

«إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ، فَلْيَبْدَأْ بِتَمْجِيدِ رَبِّهِ جَلَّ وَعَزَّ، وَالثَّنَاءِ عَلَيْهِ، ثُمَّ يُصَلِّي عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ يَدْعُو بَعْدُ بِمَا شَاءَ»:

“जब तुम में से कोई भी नमाज़ पढ़े (और दुआ करना चाहे) तो वह पहले अपने पालनहार का महिमामंडन और उसकी प्रशंसा करे, फिर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजे, फिर उसके बाद जो चाहे दुआ माँगे।”

यदि वह अल्लाह की प्रशंसा से शुरू करे, विशेष रूप से अल्लाह की प्रशंसा पर आधारित

वे आयतें, जो सूरतों के प्रारंभ में होती हैं, जो आगे आएँगी, फिर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजे, फिर वह कई प्रकार की स्तुति के साथ अल्लाह की प्रशंसा करे, जिनमें से कुछ का उल्लेख आगे किया जाएगा, तो वह दुआ क़बूल किए जाने के अधिक निकट होगी।

5 वह अल्लाह सर्वशक्तिमान से इस हाल में दुआ करे कि उसके प्रति अच्छी सोच रखने वाला हो और उसे दुआ के क़बूल होने का यक़ीन हो, तथा वह दुआ के क़बूल होने के लिए जल्दी न करे। बल्कि उसे पूर्ण विश्वास हो कि अल्लाह तआला उसकी दुआ को क़बूल करेगा। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

से रिवायत करते हैं कि आपने फरमाया :

«لَا يَزَالُ يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ، مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ، مَا لَمْ يَسْتَعْجِلْ»:

“बंदे की दुआ हमेशा क़बूल होती है, जब तक कि वह पाप या रिशता-नाता तोड़ने की दुआ न करे, जब तक कि वह जल्दी न करे।” पूछा गया : ऐ अल्लाह के रसूल जल्दी करने का क्या मतलब है? आपने फरमाया :

«يَقُولُ قَدْ دَعَوْتُ وَقَدْ دَعَوْتُ، فَلَمْ أَرَ يَسْتَجِيبُ لِي، فَيَسْتَحْسِرُ عِنْدَ ذَلِكَ وَيَدَعُ الدُّعَاءَ»:

“बंदे की दुआ हमेशा क़बूल होती है, जब तक कि वह पाप या रिशता-नाता तोड़ने की दुआ न करे, जब तक कि वह जल्दी न करे।” पूछा गया : ऐ अल्लाह के रसूल जल्दी करने का क्या मतलब है? आपने फरमाया : “वह कहता

है : मैंने दुआ की, और मैंने दुआ की। लेकिन मैं नहीं देखता कि वह क़बूल होती है। तो उस समय वह रुक जाता है और दुआ करना छोड़ देता है।" इसे मुस्लिम (2735) ने रिवायत किया है।

6 वह अल्लाह से उसके अच्छे नामों के साथ दुआ करे और उनके बीच इस तरह से विविधता लाए कि ऐसे नाम का चयन करे जो दुआ के अनुकूल हो। चुनाँचे यदि वह अल्लाह से जीविका का प्रश्न करे, तो कहे : "ऐ रज़्ज़ाक़ (जीविका प्रदान करने वाले)", यदि अल्लाह से दया का सवाल करे, तो कहे : "ऐ रहमान, ऐ रहीम (परम दयावान्, अत्यंत दया करने वाले), यदि अल्लाह से इज़्ज़त (प्रभुत्व, गौरव) का सवाल करे, तो कहे : "ऐ अज़ीज़" (प्रभुत्वशाली),

यदि अल्लाह से क्षमा माँगे, तो कहे : "ऐ ग़फ़ूर" (क्षमा करने वाले), और अगर शिफ़ा (आरोग्य) का प्रश्न करे, तो कहे : "ऐ शाफ़ी" (ऐ शिफा देने वाले)। इस प्रकार वह अल्लाह के ऐसे नाम के साथ दुआ करे जो उसकी दुआ के अनुकूल हो। क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾ [الأعراف:١٨٠]

"और सबसे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, अतः उसे उनके साथ पुकारो।" [अल-आराफ़ : 180]।

7 वह दुआ के शब्दों को दोहराए और अनुरोध में अल्लाह सर्वशक्तिमान से आग्रह करे। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बद्र के युद्ध के अवसर पर अपने साथियों के लिए दुआ करने के संबंध में इब्ने अब्बास

रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ करते हुए कहा :

«اللَّهُمَّ أَنْجِزْ لِي مَا وَعَدْتَنِي، اللَّهُمَّ آتِ مَا وَعَدْتَنِي»:

"ऐ अल्लाह! उसे पूरा कर दे, जो तू ने मुझसे वादा किया है। ऐ अल्लाह! जो तूने मुझसे वादा किया है, उसे प्रदान कर दे।" आप निरंतर अपने पालनहार से दुआ करते रहे यहाँ तक कि आपकी चादर आपके मोंढे से गिर गई। तथा अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आपसे लिपट कर कहने लगे : ऐ अल्लाह के नबी! आपका अपने पालनहार से दुआ करना काफी है।" इसे मुस्लिम (हदीस संख्या : 1763) ने रिवायत किया है।

इसी तरह, सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से वर्णित

है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दौस के लिए दुआ की, तो फरमाया :

«اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْساً وائْتِ بهم، اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْساً وائت بهم»:

"ऐ अल्लाह! दौस को (इस्लाम की) हिदायत दे और उन्हें (मदीना) लेकर आ। ऐ अल्लाह! दौस को (इस्लाम की) हिदायत दे और उन्हें (मदीना) लेकर आ।" इसे बुख़ारी (हदीस संख्या : 2937) और मुस्लिम (हदीस संख्या : 2524) ने रिवायत किया है।

8 वह अपनी दुआ को गुप्त रखे और उसे ज़ोर से न करे; क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿ٱدۡعُواْ رَبَّكُمۡ تَضَرُّعٗا وَخُفۡيَةًۚ﴾ [الأعراف: ٥٥]

"अपने रब को गिड़गिड़ाकर और चुपके-

चुपके पुकारो।” [अल-आराफ : 55], और दुआ को गुप्त रखना इख़्लास के अधिक निकट है। इसी कारण अल्लाह तआला ने ज़करिया अलैहिस्सलाम की दुआ की इस तरह प्रशंसा की है :

﴿إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥ نِدَآءً خَفِيًّا ٣﴾ [مريم: ٣]

“जब उसने अपने पालनहार को गुप्त रूप से पुकारा।” [मरियम : 3] तफ़्सीर के इमामों के कथनों में से एक के अनुसार, उन्होंने इख़्लास की ख़ातिर ऐसा किया था।

9 उसकी दुआ अल्लाह सर्वशक्तिमान की प्रशंसा और स्तुति पर आधारित होनी चाहिए। क्योंकि अल्लाह इस बात को पसंद करता है कि उसका बंदा उसकी प्रशंसा करे; ताकि वह उसकी स्तुति करके उसकी

उपासना करे, अन्यथा अल्लाह अपने बंदों से बेनियाज़ है। चुनाँचे सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

«وَلَا أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللهِ وَلِذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ»:

“अल्लाह से अधिक किसी को भी प्रशंसा पसंद नहीं है। इसीलिए उसने स्वयं की प्रशंसा की है।”

10 दुआ करने वाला दुआ के क़बूल होने के समयों को तलाश करे और उनमें अल्लाह तआला से दुआ करे।

हदीस में वर्णित दुआ के क़बूल होने के

स्थानों और समयों में से कुछ ये हैं : (अज़ान और इक़ामत के दरमियान दुआ करना - रात के अंतिम तिहाई में – जुमा के दिन की घड़ी में – फ़र्ज नमाज़ों के बाद - सजदों में – बारिश होते समय – मुसलमान का अपने भाई के लिए उसकी अनुपस्थिति में दुआ करना - पिता का अपनी संतान के लिए दुआ करना – मुसाफ़िर की दुआ – मज़लूम (उत्पीड़ित) की दुआ)

सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ۝٢ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝٣ مَٰلِكِ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ۝٤﴾

[الفاتحة:٢-٤]

“सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सर्व संसार का पालनहार है। असीम दयावान्, अत्यंत दयालु है। बदले के दिन का मालिक है।” [अल-फ़ातिहा : 2-4]

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ جَاعِلِ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُوْلِيٓ أَجۡنِحَةٖ مَّثۡنَىٰ وَثُلَٰثَ وَرُبَٰعَۚ يَزِيدُ فِي ٱلۡخَلۡقِ مَا يَشَآءُۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ١﴾ [فاطر:١]

“सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आकाशों तथा धरती का पैदा करने वाला है, (और) दो-दो, तीन-तीन, चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को संदेशवाहक बनाने वाला है। वह संरचना में जैसी चाहता है अभिवृद्धि करता है। निःसंदेह अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है।” [फ़ातिर : 1]

﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ ٱلظُّلُمَٰتِ وَٱلنُّورَ﴾ [الأنعام:١]

“सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया तथा अँधेरों और प्रकाश को बनाया।” [अल-अनआम : 1]

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي لَهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَهُ ٱلۡحَمۡدُ فِي ٱلۡأٓخِرَةِۚ وَهُوَ
ٱلۡحَكِيمُ ٱلۡخَبِيرُ ١﴾ [سبأ:١]

“हर प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जिसके अधिकार में वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो धरती में है। और आख़िरत (परलोक) में भी उसी के लिए प्रशंसा है और वह पूर्ण हिकमत वाला, सबकी खबर रखने वाला है।” [सबा : 1]

1

«الْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ»

अल-हम्दुलिल्लाहि, हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फीह

“सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, बहुत अधिक, पवित्र और बरकत वाली प्रशंसा।”

2

«رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ، أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ، أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ، وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ: اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ»

“रब्बना लकल्-हम्दु, मिल्उस्-समावाति वल अर्ज़ि, व-मिल्ओ मा शेअ्ता मिन शैइन बअ्दु। अहलस्सनाए वल मज्दि, अहक़्क़ो मा क़ालल्-अब्दु, व कुल्लुना लका अब्दुन : अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा आतैता वला मोअ्तिया लिमा मनअ्ता वला यन्फ़ओ ज़ल-जद्दि मिनकल जद्दो”

“ऐे हमारे रब! तेरे ही लिए सब प्रशंसा है आकाशों और धरती के बराबर, और जो कुछ तू इसके बाद चाहे, उसके बराबर। तू ही प्रशंसा और महिमा के योग्य है। सबसे सच्ची बात जो बंदे ने कही - और हम सब तेरे बंदे हैं - यह है : ऐे अल्लाह! जो तू दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले, उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी धनवान को उसका धन तेरे यहाँ कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता।”

3

«اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهُ، وَإِلَيْكَ يَرْجِعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ»

अल्लाहुम्मा लकल-ह़म्दु कुल्लुहू, व इलैका यर्जेउल-अम्रो कुल्लुहू

“ऐ अल्लाह! सब प्रशंसा तेरे ही लिए है, और सारा मामला तेरी ही ओर लौटता है।”

4

«اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَوَاتِ
وَالأَرْضِ، وَلَكَ الحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَوَاتِ
وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الحَمْدُ أَنْتَ
نُورُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، أَنْتَ
الحَقُّ، وَقَوْلُكَ الحَقُّ، وَوَعْدُكَ الحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ
الحَقُّ، وَالجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، (وَالنَّبِيُّونَ
حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقٌّ)
وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَبِكَ
آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، (وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ)
وَإِلَيْكَ خَاصَمْتُ، وَبِكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ
لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَأَسْرَرْتُ

وَأَعْلَنْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، (أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ) لاَ إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ»

"अल्लाहुम्मा लकल ह़म्दु, अन्ता क़य्यिमुस-समावाति वल-अर्ज़ि, व लकल ह़म्दु अन्ता रब्बुस-समावाति वल-अर्ज़ि व मन् फीहिन्ना, व लकल ह़म्दु अन्ता नुरुस-समावाति वल-अर्ज़ि व मन फीहिन्ना, अन्तल-हक्कु, व क़ौलुका हक्कु, व वा'दुकल- हक्कु, व लिक़ाउकल हक्कु, वल-जन्नतु हक्कुन, वन्नारु हक्कुन, (वन-नबिय्यूना हक्कुन, व मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़्क़ुन) वस्साअतु ह़क़्क़ुन, अल्लाहुम्मा लका अस्लमतु, व-बिका आमन्तु, व-अलैका तवक्कलतु, (व-इलैका अनब्तु) व-इलैका ख़ासम्तु, व-बिका ह़ाकम्तु, फ़ग़्फ़िरली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़रतु, व-अस्रतु व-आलन्तु, वमा

अन्ता आ'लमु बिही मिन्नी, (अन्तल मुक़द्दिमु, व अन्तल मुअख़्ख़िरु) ला इलाहा इल्ला अन्ता"

"ऐ अल्लाह हमारे पालनहार, तेरे ही लिए सब प्रशंसा है, तू ही आकाशों और धरती का थामने वाला है। और तेरे ही लिए सब प्रशंसा है, तू ही आकाशों और धरती का और जो कुछ उनमें हैं, सबका पालनहार है। और तेरे ही लिए सब प्रशंसा है, तू ही आकाशों और धरती का प्रकाश है और उनका भी (प्रकाश है) जो उनमें हैं। तू सत्य है, तोरी बात सत्य है, तेरा वादा सत्य है, तेरी मुलाक़ात सत्य है, जन्नत सत्य है, जहन्नम सत्य है, (नबी सत्य हैं, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सत्य हैं), क़ियामत सत्य है। ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए मुसलमान (आज्ञाकारी) हुआ, और तुझी

पर मैं ईमान लाया और तुझी पर मैं ने भरोसा किया, (और तेरी ही तरफ़् लौटा) और तेरी ही ओर मैं अपना झगड़ा लेकर गया, और तेरी ही ओर निर्णय के लिए गया। इसलिए मेरा वह गुनाह बख़्श दे जो मैंने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैंने छिपा कर किया और जो मैंने ज़ाहिर में किया। और वह भी जिसे तू मुझसे अधिक जानता है, (तू ही सबसे पहले है और तू ही सबसे बाद में है) तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं।”

﴿ٱللَّهُمَّ مَٰلِكَ ٱلۡمُلۡكِ تُؤۡتِي ٱلۡمُلۡكَ مَن تَشَآءُ
وَتَنزِعُ ٱلۡمُلۡكَ مِمَّن تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَن تَشَآءُۖ بِيَدِكَ ٱلۡخَيۡرُۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيۡءٖ قَدِيرٞ ٢٦ تُولِجُ ٱلَّيۡلَ فِي ٱلنَّهَارِ وَتُولِجُ
ٱلنَّهَارَ فِي ٱلَّيۡلِۖ وَتُخۡرِجُ ٱلۡحَيَّ مِنَ ٱلۡمَيِّتِ
وَتُخۡرِجُ ٱلۡمَيِّتَ مِنَ ٱلۡحَيِّۖ وَتَرۡزُقُ مَن تَشَآءُ
بِغَيۡرِ حِسَابٖ ٢٧﴾ [آل عمران:٢٦-٢٧]

“ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे राज्य देता है और जिससे चाहे राज्य छीन लेता है, और जिसे चाहे इज़्ज़त प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। तेरे

ही हाथ में हर भलाई है। निःसंदेह तू हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है। तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और तू निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है, और तू जिसे चाहे बिना किसी हिसाब के रोज़ी देता है।"

(ये सूरत आल-इमरान की दो आयतें (26-27) हैं, पहली आयत की शुरुआत में "क़ाला" का शब्द जानबूझकर हटा दिया गया है, दुआ की शुरुआत को इंगित करने के लिए.)

5

«اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَرَبَّ الْأَرْضِ وَرَبَّ
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ
الْحَبِّ وَالنَّوَى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ
وَالْفُرْقَانِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ
أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ
فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ
بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ
شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ،
اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ، وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ»

“अल्लाहुम्मा रब्बस-समावाति व रब्बल-अर्शिल-अज़ीम, रब्बना व रब्बा कुल्लि शैइन,

फ़ालिक़ल-ह़ब्बि वन्नवा, व-मुन्ज़िलत-तौराति वल-इन्जीलि वल-फ़ुरक़ानि, अऊज़ु बिका मिन शर्रि कुल्लि शैइन अन्ता आख़िज़ुन बि-नासियतिहि, अल्लाहुम्मा अन्तल-अव्वलु फ-लैसा क़ब्लका शैउन, व-अन्तल-आख़िरु फ़-लैसा बा'दका शैउन, व-अन्तज़-ज़ाहिरु फ-लैसा फौक़का शैउन, व-अन्तल-बातिनु फ-लैसा दूनका शैउन, इक़्ज़ि अन्नद-दैना व-अग़निना मिनल-फ़क़्रि"

"ऐ अल्लाह, ऐ आकाशों के रब, धरती के रब और महान अर्श के रब! ऐ हमारे रब और हर चीज़ के रब! दाने और गुठली को फाड़ने वाले! तौरात, इन्जील और फुरक़ान (क़ुरआन) के उतारने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ जिसकी पेशानी तू पकड़े हुए

है। ऐ अल्लाह! तू ही अव्वल (सबसे पहले) है, तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं। और तू ही आखिर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं। और तू ही ज़ाहिर है, तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं। और तू ही बातिन है, तुझसे वरे कोई चीज़ नहीं। हमारा क़र्ज अदा कर दे और हमें निर्धनता से (निकाल कर) धनवान कर दे।"

6

«اللَّهُمَّ إِنِّي أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ مَلَائِكَتَكَ وَحَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَأُشْهِدُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ، أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी उशहिदुका व-उशहिदु मलाईकतका व-ह-म-लता अर्शिका, व-उशहिदु मन् फ़िस-समावाति व-मन् फ़िल-अर्ज़ि, अन्नका अन्तल्लाहु ला इलाहा इल्ला अन्ता वह्दका ला शरीका लका, व-अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुका व-रसूलुका”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और मैं तेरे

फरिश्तों और तेरा अर्श उठाने वालों को गवाह बनाता हूँ, तथा उन सब को गवाह बनाता हूँ जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि निःसंदेह मुहम्मद तेरे बंदे और रसूल हैं।”

7

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका बि-अन्नी अश्हदु अन्नका अन्तल्लाहु ला इलाहा इल्ला अन्तल-अहदुस-समद, अल्लज़ी लम यलिद वलम यूलद् वलम यकुन् लहू कुफ़ुवन अहद”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ इस बात के माध्यम से कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई अन्य उपासना के योग्य नहीं। तू अकेला और बेनियाज़ है, जिसने न किसी को जना और न वह किसी से जना

गया और न उसका कोई समकक्ष है।"

(हदीस में यह उल्लेख किया गया है कि यह दुआ अल्लाह का "इस्मे आज़म" यानी सबसे बड़ा नाम है कि जिसके द्वारा अगर दुआ की जाए तो अल्लाह क़बूल करता है और यदि कुछ माँगा जाए, तो वह प्रदान करता है।)

8

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ»

“ला इलाहा इल्लल्लाहुल अज़ीमुल हलीम, ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुल अर्शिल अज़ीम, ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुस समावाति व-रब्बुल अर्ज़ि व-रब्बुल अर्शिल करीम”

“अल्लाह के अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, जो बड़ी महिमा वाला, सहनशील है। अल्लाह के अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, जो बड़े अर्श का रब है। अल्लाह के अलावा कोई इबादत के

योग्य नहीं, जो आसमानों का रब और धरती का रब और अर्शे करीम का रब है।"

(यह वेदना और चिंता की दुआओं में से है।)

9

«اللّٰهُ، اللّٰهُ رَبِّي لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا»

अल्लाहु, अल्लाहु रब्बी, ला उश्रिको बिही शैअन्

"अल्लाह, अल्लाह मेरा पालनहार है, मैं उसके साथ किसी को साझी नहीं करता।"

(यह वेदना और चिंता की दुआओं में से है।)

10

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ»

"ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, अल्लाहु अक्बरु कबीरा, वल-ह़म्दुलिल्लाहि कसीरा, सुब्ह़ानल्लाहि रब्बिल आलमीन, ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीज़िल ह़कीम"

"अल्लाह के अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। अल्लाह

सबसे बड़ा है बहुत बड़ा। और सब प्रशंसा केवल अल्लाह ही के लिए है बहुत अधिक। अल्लाह बहुत पाक है जो सर्व संसार का पालनहार है। प्रभुत्वशाली और हिकमत वाले अल्लाह की तौफीक़ के बिना न बुराई से बचने की शक्ति है और न नेकी करने की ताक़त।”

11

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ»

“ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्कु, व-लहुल ह़म्दु, व-हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, सुब्ह़ानल्लाह, वल-ह़म्दु लिल्लाह, व ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अक्बर, वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम”

“अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य (माबूद) नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी

नहीं। उसी का राज्य है और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिवान है। अल्लाह बहुत पाक है, और सब प्रशंसा केवल अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह के अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, और अल्लाह सबसे बड़ा है, तथा सर्वोच्च और महान अल्लाह की तौफीक़ के बिना न बुराई से बचने की शक्ति है और न नेकी करने की ताक़त।"

12

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ، أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ»

"ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू, अन्जज़ा वअ्दहू, व न-स-र अब्दहू, व ह-ज़-मल अह्ज़ाबा वह्दहू"

"अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, वह अकेला है। उसने अपना वचन पूरा किया और अपने बंदे की सहायता की और अकेले सारे जत्थों को पराजित किया।"

13

«اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي، فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ»

"अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता, खलक़्तनी व अना अब्दुका, व अना अला अह्दिका व वा'दिका मस्तता'तु, अऊज़ु बिका मिन् शर्रि मा सना'तु, अबूओ लका बि-ने'मतिका अलय्या, व अबूओ लका बि-ज़ंबी फग़्फ़िर् ली, फ़-इन्नहु ला यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता"

“ऐ अल्लाह तू ही मेरा पालनहार है। तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बंदा हूँ, और मैं अपनी शक्ति भर तुझसे की हुई प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर क़ायम हूँ। मैंने जो कुछ किया उसकी बुराई से तेरी शरण में आता हूँ। मैं अपने ऊपर तेरी नेमत का इक़रार करता हूँ। और मैं तेरे समक्ष अपने गुनाहों को स्वीकार करता हूँ। अतः मुझे क्षमा कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं क्षमा कर सकता।”

14

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْمَنَّانُ، بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ، يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका बि-अन्ना लकल ह़म्दु, ला इलाहा इल्ला अन्तल-मन्नानु, बदीउस्समावाति वल-अर्ज़ि, या ज़ल-जलालि वल-इकरामि, या ह़य्यु या क़य्यूमु”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ इस बात के हवाले से कि हर प्रकार की प्रशंसा तेरे ही लिए है, तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। तू बहुत उपकार करने वाला, आकाशों तथा धरती को

बिना पूर्व उदाहरण के बनाने वाला है, ऐ महिमा और सम्मान वाले! ऐ परम जीवित! ऐ सब कुछ थामने वाले!”

(हदीस में यह उल्लेख किया गया है कि यह दुआ अल्लाह का “इस्मे आज़म” यानी सबसे बड़ा नाम है कि जिसके द्वारा अगर दुआ की जाए तो अल्लाह क़बूल करता है और यदि कुछ माँगा जाए, तो वह प्रदान करता है।)

15

«سُبْحَانَكَ مَا أَعْظَمَكَ رَبَّنَا»

“सुब्हानका मा आज़मका रब्बना”

“तू हर दोष से पाक है, ऐ हमारे पालनहार तू कितना महान है।”

16

«سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ
وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ»

“सुब्हाना ज़िल-जबरूति वल-मलकूति वल-किबरियाए वल-अज़मति”

“पाक है परम शक्ति, राज्य, गौरव और महानता वाला (अल्लाह)।”

17

«اللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ ذُو الْمَلَكُوتِ وَالْجَبَرُوتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ»

“अल्लाहु अक्बर – तीन बार - ज़ुल-जबरूति वल-मलकूति वल-किबरियाए वल-अज़मति”

“अल्लाह सबसे बड़ा है – तीन बार – जो परम शक्ति, राज्य, गौरव और महानता वाला है।”

18

«اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيرًا، وَسُبْحَانَ اللهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا»

“अल्लाहु अक्बरु कबीरा, वल-ह़म्दुलिल्लाहि कसीरा, व-सुब्ह़ानल्लाहि बुक्रतन् व असीला”

“अल्लाह सबसे बड़ा है बहुत बड़ा, और हर प्रकार की प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है बहुत अधिक प्रशंसा, और अल्लाह पाक है हर दोष से सुबह व शाम।”

दुआ करने वाले के लिए बेहतर है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा करने के बाद, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजे।

«اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّم عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ»

"अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम अला मुहम्मद, व अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा, इन्नका हमीदुन मजीद"

(ऐ अल्लाह! तू दया और शांति अवतिरत कर मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर, जिस प्रकार तूने इब्राहीम पर और इब्राहीम के परिवार पर दया अवतिरत किया। निःसंदेह तू प्रशंसनीय और गौरवशाली है।)

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

क़ुरआन की दुआएँ

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

1

﴿حَسْبِيَ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُۖ وَهُوَ رَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ١٢٩﴾

[التوبة:١٢٩]

“मेरे लिए अल्लाह ही पर्याप्त है, उसके अलावा कोई पूजा के योग्य नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया और वह महान सिंहासन का मालिक है।”

[अत-तौबा : 129]

2

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝٨٧﴾ [الأنبياء:٨٧]

“तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तू पाक है, निःसंदेह मैं अत्याचार करने वालों में हो गया।" [अंबिया : 87]

3

﴿رَبِّ ٱجۡعَلۡنِي مُقِيمَ ٱلصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِيۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلۡ دُعَآءِ ۝٤٠﴾ [إبراهيم:٤٠]

“ऐ मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना तथा मेरी संतान में से भी। ऐ हमारे पालनहर! और मेरी दुआ स्वीकार कर।” [इबराहीम : 40]

4

﴿هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُۥ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾﴾ [آل عمران:٣٨]

“ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपने पास से एक अच्छी संतान प्रदान कर। निःसंदेह तू ही दुआ को बहुत सुनने वाला है।” [आल-इमरान : 38]

5

﴿رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسۡرَافَنَا فِيٓ
أَمۡرِنَا وَثَبِّتۡ أَقۡدَامَنَا وَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ
ٱلۡكَٰفِرِينَ ١٤٧﴾ [آل عمران:١٤٧]

“ऐ हमारे पालनहार! हमारे पापों को और हमारे मामले में हमसे होने वाली अति (ज़्यादती) को क्षमा कर दे। तथा हमारे पैरों को जमाए रख और काफ़िर क़ौम पर हमें विजय प्रदान कर।”

[आल-इमरान : 147]

6

﴿رَّبِّ ٱغْفِرْ وَٱرْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ ٱلرَّٰحِمِينَ ۝١١٨﴾ [المؤمنون:١١٨]

“ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और दया कर। तू तो दया करने वालों में सबसे अधिक दया करने वाला है।” [अल-मूमिनून : 118]

7

﴿رَبِّ إِنِّى ظَلَمْتُ نَفْسِى فَٱغْفِرْ لِى﴾ [القصص:١٦]

“ऐ मेरे पालनहार! निश्चय मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया। अतः तू मुझे क्षमा कर दे।” [अल-क़सस : 18]

8

﴿رَبَّنَآ أَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرٗا وَثَبِّتۡ أَقۡدَامَنَا وَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٢٥٠﴾

[البقرة: ٢٥٠]

“ऐ हमारे पालनहार! हमपर धैर्य उँडेल दे और हमारे क़दम जमा दे और इन काफ़िर लोगों पर हमें विजय प्रदान कर।” [अल-बक़रह : 250]

9

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوبَنَا بَعۡدَ إِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةًۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡوَهَّابُ ۝٨﴾ [آل عمران:٨]

“ऐ हमारे पालनहार! हमारे दिलों को (सत्य से) विचलित न कर, इसके बाद कि तूने हमें मार्गदर्शन प्रदान किया और हमें अपने पास से दया प्रदान कर। निःसंदेह तू महान दाता है।”

[आल-इमरान : 8]

10

﴿رَبِّ ٱشْرَحْ لِى صَدْرِى ۝٢٥ وَيَسِّرْ لِىٓ أَمْرِى ۝٢٦﴾ [طه: ٢٥-٢٦]

“ऐ मेरे पालनहार! मेरे लिए मेरा सीना खोल दे और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे।”

[ताहा : 25-26]

11

﴿مَسَّنِىَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ ۝٨٣﴾

[الأنبياء: ٨٣]

“मुझे तकलीफ़ पहुँची है, और तू दया करने वालों में सबसे बढ़कर दयावान् है।”

[अंबिया : 83]

12

﴿رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَٰتِ ٱلشَّيَٰطِينِ ٩٧
وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ٩٨﴾

[المؤمنون: ٩٧–٩٨]

“ऐ मेरे पालनहार! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ और ऐ मेरे पालनहार! मैं इससे भी तेरी शरण चाहता हूँ कि वे (शैतान) मेरे पास आएँ।”

13

﴿رَبَّنَا ٱصۡرِفۡ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ٦٥﴾ [الفرقان:٦٥]

“ऐ हमारे पालनहार! हमसे जहन्नम की यातना दूर कर दे। निश्चय उसकी यातना चिमट जाने वाली है।”

14

﴿وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا ٱفْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِٱلْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْفَٰتِحِينَ ﴿٨٩﴾﴾ [الأعراف:٨٩]

“हमारा पालनहार हर चीज़ को अपने ज्ञान के घेरे में लिए हुए है। हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया। ऐ हमारे पालनहार! हमारे और हमारी क़ौम के बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर दे। और तू सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।” [अल-आराफ़ : 89]

15

﴿ٱرۡزُقۡنَا وَأَنتَ خَيۡرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ١١٤﴾

[المائدة: ١١٤]

"और हमें जीविका प्रदान कर। तू ही सबसे बेहतर जीविका प्रदान करने वाला है।" [अल-मायदा : 114]

16

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةٗ وَهَيِّئۡ لَنَا مِنۡ أَمۡرِنَا رَشَدٗا ١٠﴾ [الكهف: ١٠]

"ऐ हमारे पालनहार! हमें अपने पास से दया प्रदान कर और हमारे लिए हमारे मामले में मार्गदर्शन (सीधे रास्ते पर चलने) को आसान कर दे।" [अल-कहफ़ : 10]

17

﴿رَبِّ هَبۡ لِي حُكۡمٗا وَأَلۡحِقۡنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ ٨٣﴾ [الشعراء:٨٣]

“ऐ मेरे पालनहार! मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे सदाचारी लोगों के साथ मिला।” [अश-शुअरा : 83]

18

﴿رَّبِّ زِدۡنِي عِلۡمٗا﴾ [طه:١١٤]

“ऐ मेरे पालनहार! मुझे ज्ञान में वृद्धि प्रदान कर।” [ताहा : 114]

19

﴿رَبِّ إِنِّي لِمَآ أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ٢٤﴾ [القصص:٢٤]

“ऐ मेरे पालनहार! जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे, निःसंदेह मैं उसका ज़रूरतमंद हूँ।”

[अल-क़सस : 24]

20

﴿رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَٰجِنَا وَذُرِّيَّـٰتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَٱجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ٧٤﴾

[الفرقان: ٧٤]

“ऐ हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों और हमारी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें परहेज़गारों का नायक बना दे।”

[अल-फ़ुरक़ान : 74]

21

﴿رَبِّ أَوۡزِعۡنِيٓ أَنۡ أَشۡكُرَ نِعۡمَتَكَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَٰلِدَيَّ وَأَنۡ أَعۡمَلَ صَٰلِحٗا تَرۡضَىٰهُ وَأَدۡخِلۡنِي بِرَحۡمَتِكَ فِي عِبَادِكَ ٱلصَّٰلِحِينَ ١٩﴾ [النمل:١٩]

"ऐ मेरे पालनहार! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी उस कृपा पर आभार प्रकट करूँ, जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि मैं अच्छा कर्म करूँ जो तुझे पसंद आए और अपनी दया से मुझे अपने सदाचारी बंदों में दाख़िल कर।" [अन-नम्ल : 19]

22

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ ﴾ ﴿وَتُبْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ ﴾ [البقرة:١٢٧-١٢٨]

“ऐ हमारे पालनहार! हमसे स्वीकार कर ले, निःसंदेह तू ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।”, “और हमारी तौबा क़बूल कर। निःसंदेह तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, अत्यंत दयावान् है।” [अल-बक़रा : 127-128]

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

नमाज़ की दुआएँ

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

1

«اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرَدِ»

"अल्लाहुम्मा बाइद् बैनी व बैना खतायाया कमा बाअद्ता बैनल मश्रिक़ि वल मग़्रिबि, अल्लाहुम्मा नक़्क़िनी मिन् खतायाया कमा युनक़्क़स्सौबुल अब्यज़ो मिनद्-दनसि, अल्लाहुम्मग़्सिलनी मिन् खतायाया बिस्सल्जि वल्माए वल बरद"

“ऐ अल्लाह! तू मेरे बीच और मेरे गुनाहों के बीच ऐसी दूरी कर दे जैसी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के बीच की है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पवित्र कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से बर्फ, पानी और ओलों के साथ धुल दे।”

(यह नमाज़ शुरू करने की दुआओं में से है)

2

«اللَّهُمَّ رَبَّ جَبْرَائِيلَ، وَمِيكَائِيلَ، وَإِسْرَافِيلَ، فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ، اهْدِنِي لِمَا اخْتُلِفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ، إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ»

“अल्लाहुम्मा रब्बा जिबराईला व मीकाईला व इसराफीला, फ़ातिरस्-समावाति वल-अर्ज़ि, आलिमल्-ग़ैबि वश्-शहादति, अन्ता तह्कुमु बैना इबादिका फीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून, इह्दिनी लिमख़्-तुलिफ़ा फीहि मिनल्-हक्क़ि

बि-इज़्निका, इन्नका तह्दी मन् तशाओ इला सिरातिम-मुस्तक़ीम”

“ऐ अल्लाह! ऐ जिबराईल, मीकाईल और इसराफ़ील के मालिक! आकाशों और धरती के रचयिता, परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले! तू ही अपने बंदों के बीच उस चीज़ के बारे में फैसला करेगा, जिसमें वे मतभेद किया करते थे। हक़ की जिस बात में मतभेद हो गया है तू अपनी अनुमति से मुझे सीधा मार्ग दिखा। निःसंदेह तू जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखाता है।”

(यह नमाज़ शुरू करने की दुआओं में से है, विशेष रूप से रात की नमाज़ – तहज्जुद - में) (तथा इसे सत्य के भ्रमित होने और दिल पर संदेह प्रकट होने के समय भी पढ़ा जाता है)

3

«وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا، وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلَاتِي، وَنُسُكِي، وَمَحْيَايَ، وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَا شَرِيكَ لَهُ، وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَنْتَ رَبِّي، وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي، وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي جَمِيعًا، إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ، وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ، لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ

فِي يَدَيْكَ، وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ»

वज्जहतु वजहिया लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल-अर्ज़ा हनीफ़ा, व-मा अना मिनल् मुशरेकीन, इन्ना सलाती, व-नुसुकी, व- मह्याया, व-ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, ला शरीका लहू, व बि-ज़ालिका उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्मा अन्तल मलिकु ला इलाहा इल्ला अन्त, अन्ता रब्बी, व-अना अब्दुका, ज़लम्तु नफ़्सी, वा'तरफ़्तु बि-ज़ंबी, फ़ग़-फ़िर् ली ज़ुनूबी जमीअन, इन्नहु ला-यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता, वह्दिनी लि-अह्सिनिल्-अख़्लाक़ि, ला यह्दी लि-अह्सनिहा इल्ला अन्ता, वस्-रिफ़ अन्नी सैयिअहा, ला यसरिफ़ु अन्नी सैयिअहा इल्ला अन्ता, लब्बैका व सा'दैका, वल-ख़ैरु

कुल्लुहू फी यदैका, वश्शर्रु लैसा इलैका, अना बिका व इलैका, तबारकता व तआलैता, अस्तग़्फ़िरुका व अतूबो इलैक"

"मैंने एकाग्रचित होकर अपना चेहरा उस अस्तित्व की ओर कर लिया, जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। निःसंदेह मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीवन और मेरी मृत्यु सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है। उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह! तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, तू ही मेरा पालनहार है और मैं तेरा बंदा हूँ। मैंने अपने आपपर ज़ुल्म किया है और मैं अपने पापों को स्वीकार करता हूँ। अतः मेरे सभी पापों को क्षमा

कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई और पापों को क्षमा नहीं कर सकता। और मुझे सबसे अच्छे व्यवहार का मार्गदर्शन कर। सबसे अच्छे व्यवहार का मार्गदर्शन तेरे सिवा कोई नहीं कर सकता। तथा मुझसे बुरे व्यवहार को दूर कर दे। क्योंकि मुझसे बुरे व्यवहार को तेरे सिवा कोई दूर नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह! मैं तेरे आज्ञापालन के लिए बार-बार हाज़िर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निस्बत तेरी ओर नहीं की जा सकती। मैं तेरी तौफीक़ से हूँ और तेरा ही आश्रय लेता हूँ। तू बरकत वाला और सर्वोच्च है। मैं तुझसे क्षमा याचना करता हूँ और पश्चाताप करता हूँ।"

(यह नमाज़ शुरू करने की दुआओं में से है, विशेष रूप से रात की नमाज़ – तहज्जुद - में)

4

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي»

"सुब्हानकल्लाहुम्मा रब्बना व बिह़म्दिका, अल्लाहुम्मग़-फिर् ली"

"ऐ अल्लाह हमारे पालनहार! तू पाक है और हम तेरी प्रशंसा करते हैं। ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे।"

(यह दुआ रुकू और सज्दे में पढ़ना धर्मसंगत है)

5

«اللَّهُمَّ أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बि-रिज़ाका मिन् सख़तिका, व बि-मुआफातिका मिन उक़ूबतिका, व अऊज़ो बिका मिन्का, ला उह्सी सनाअन अलैका, अन्ता कमा अस्नैता अला नफ़्सिका

“ऐ अल्लाह! मैं तेरे क्रोध से तेरी प्रसन्नता की और तेरी सज़ा से तेरी क्षमा की शरण चाहता हूँ। तथा मैं तुझसे तेरी ही शरण चाहता हूँ। मैं तेरी संपूर्ण प्रशंसा करने की क्षमता नहीं रखता।

तू उसी तरह है जैसे तूने स्वयं की प्रशंसा की है।"

(यह दुआ सज्दे में पढ़ना धर्मसंगत है)

6

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّهُ، وَجِلَّهُ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلَانِيَتَهُ وَسِرَّهُ»

"अल्लाहुम्मग़्-फ़िर् ली ज़ंबी कुल्लहू दिक़्क़हू, व जिल्लहू, व अव्वलहू व आख़िरहू, व अलानियतहू व सिर्रहू"

"ऐ अल्लाह मेरे थोड़े और अधिक, पहले और पिछले, खुले और छिपे, सभी पापों को क्षमा कर दे।"

(यह दुआ सज्दे में पढ़ना धर्मसंगत है)

7

«اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمِنْ فَوْقِي نُورًا، وَمِنْ تَحْتِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ شِمَالِي نُورًا، وَمِنْ بَيْنِ يَدَيَّ نُورًا، وَمِنْ خَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَأَعْظِمْ لِي نُورًا»

“अल्लाहुम्मज्-अल ली फी क़ल्बी नूरा, व फी लिसानी नूरा, व फी सम्ई नूरा, व फी बसरी नूरा, व मिन फ़ौक़ी नूरा, व मिन तह्ती नूरा, व अन् यमीनी नूरा, व अन शिमाली नूरा, व मिन् बैनि यदय्या नूरा, व मिन ख़ल्फ़ी नूरा, वज्अल फी नफ़्सी नूरा, व आज़िम ली नूरा”

“ऐ अल्लाह! मेरे दिल में प्रकाश पैदा कर दे, मेरी ज़बान में प्रकाश पैदा कर दे, मेरे कान में प्रकाश पैदा कर दे, मेरी आँख में प्रकाश पैदा कर दे, मेरे ऊपर से प्रकाश कर दे, मेरे नीचे से प्रकाश कर दे, मेरे दाएँ प्रकाश कर दे, मेंरे बाएँ प्रकाश कर दे, मेरे आगे प्रकाश कर दे, मेरे पीछे प्रकाश कर दे और मेरे प्राण में प्रकाश भर दे और मेरे लिए प्रकाश को बहुत अधिक कर दे।”

(यह दुआ सज्दे में पढ़ना धर्मसंगत है, विशेष रूप से रात की नमाज़ – तहज्जुद - में)

8

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् अज़ाबि जहन्नम, व मिन् अज़ाबिल क़ब्र, व मिन फित्नतिल मह्या वल ममात, व मिन् शर्रि फित्नतिल मसीहिद्दज्जाल।

“ऐ अल्लाह! मैं जहन्नम की यातना से, और क़ब्र की यातना से, और जीवन और मृत्यु के फित्ने से, तथा मसीह दज्जाल के फित्ने की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ।”

(यह दुआ अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना धर्मसंगत है)

9

«اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ»

अल्लाहुम्मा अ-इन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्नि इबादतिक

“ऐ अल्लाह! तू अपने ज़िक्र (जप), अपने शुक्र और अच्छे ढंग से अपनी इबादत पर मेरी मदद कर।”

(यह दुआ अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना धर्मसंगत है)

10

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ»

“अल्लाहुम्मग़्-फ़िर् ली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़रतु, वमा अस-रर्तु वमा-आलन्तु, वमा अस्-रफ़्तु, वमा अन्ता आ’लमु बिही मिन्नी, अन्तल मुक़द्दिमु, व अन्तल मुअख़्ख़िरु, ला इलाहा इल्ला अन्ता”

“ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे, जो मैंने पहले किया और जो मैंने पीछे किया, और जो मैंने छिपा कर किया और जो मैंने दिखाकर किया,

और जो मैंने हद से बढ़कर किया, और जिसे तू मुझसे अधिक जानता है। तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं।”

(यह दुआ अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना धर्मसंगत है)

11

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ، وَالْمَغْرَمِ»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल-मा'समि, वल-मग़्रमि"

"ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ गुनाह और क़र्ज़ (ऋण) से।"

(यह दुआ अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना धर्मसंगत है)

12

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल-जन्नता, व अऊज़ो बिका मिनन्नारि”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत माँगता हूँ और मैं जहन्नम से तेरी शरण लेता हूँ।”

(यह दुआ अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना धर्मसंगत है)

13

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْبُخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ الْجُبْنِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल-बुख़्लि, व अऊज़ो बिका मिनल-जुब्नि, व अऊज़ो बिका मिन् अन् उरद्दा इला अरज़लिल्-उमुरि, व अऊज़ो बिका मिन् फ़ित्नतिद्-दुन्या, व अऊज़ो बिका मिन् अज़ाबिल-क़ब्र

“ऐ अल्लाह! मैं कंजूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ और मैं कायरता से तेरी पनाह चाहता हूँ और मैं इससे तेरी पनाह चाहता हूँ कि उम्र के सबसे

अपमानजनक हिस्से (बुढ़ापे) की ओर लौटाया जाऊँ, और मैं दुनिया के फ़ित्ने (परीक्षण) से तेरी पनाह चाहता हूँ और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ क़ब्र की यातना से।"

(यह दुआ अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना धर्मसंगत है)

14

«اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ، فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लम्तु नफ्सी ज़ुल्मन कसीरन वला यग्फ़िरूज़्ज़ुनूबा इल्ला अन्त, फ़ग्फिर् ली मग्फि-रतन मिन् इंदिक, वर्-ह़म्नी, इन्नका अन्तल-ग़फूरुर्रह़ीम”

“ऐ अल्लाह मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया और तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को माफ़ नही कर सकता। इसलिए मुझे अपने पास से क्षमा प्रदान कर और मुझ पर दया कर। निःसंदेह तू बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयालु है।”

(यह दुआ नमाज़ में पढ़ना धर्मसंगत है। इसलिए इसे सज्दे में या अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना चाहिए)

15

«اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا»

“अल्लाहुम्मा ह़ासिब्नी हिसाबन यसीरा”

“ऐ अल्लाह! मुझसे आसान (सरसरी) हिसाब ले।”

(यह दुआ नमाज़ में पढ़ना धर्मसंगत है। इसलिए इसे सज्दे में या अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना चाहिए)

16

«رَبِّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ»

रब्बि क़िनी अज़ाबका यौमा तब्असु इबादक्

“ऐ मेरे पालनहार! तू मुझे उस दिन अपनी यातना से बचा, जिस दिन तू अपने बंदों को उठाएगा।”

(यह दुआ नमाज़ में पढ़ना धर्मसंगत है। इसलिए इसे सज्दे में या अंतिम तशह्हुद में सलाम फेरने से पहले पढ़ना चाहिए)

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

नबवी दुआएँ

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

1

«اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ»

अल्लाहुम्मा रब्बना आतिना फ़िद्-दुन्या ह-स-नह्, व-फ़िल आख़िरति ह-स-नह्, व-क़िना अज़ाबन्नार

“ऐ अल्लाह हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भलाई और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें जहन्नम की यातना से बचा।”

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ अधिक से अधिक पढ़ा करते थे)

2

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي، وَارْزُقْنِي»

अल्लाहुम्मग़-फिर् ली, वर्हम्नी, वह्दिनी, व-आफिनी, वर्ज़ुक़्नी

“ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे, मुझपर दया कर, मुझे हिदायत दे, मुझे आफियत में रख और मुझे रोज़ी दे।”

(यह दुनिया और आख़िरत की भलाई के लिए एक व्यापक दुआ है।)

3

«اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلاَلِكَ عَنْ حَرَامِكَ
وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ»

“अल्लाहुम्मक-फ़िनी बि-ह़लालिका अन् ह़रामिक, व-अग़्निनी बि-फ़ज़्लिका अम्मन सिवाक”

“ऐ अल्लाह मुझे हलाल प्रदान करके हराम से काफी हो जा और मुझे अपनी अनुकंपा प्रदान करके अपने सिवा अन्य से बेनियाज़ कर दे।”

(यह क़र्ज़ उतारने की दुआ है)

4

«اللَّهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ صَرِّفْ قُلُوبَنَا عَلَى طَاعَتِكَ» «يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ»

"अल्लाहुम्मा मुसर्रिफ़ल-क़ुलूबि, सर्रिफ़् क़ुलूबना अला ताअतिका" "या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि सब्बित क़ल्बी अला दीनिका"

"ऐ अल्लाह! दिलों का संचालन करने वाले, हमारे दिलों को अपनी आज्ञाकारिता पर स्थिर कर दे।" "ऐ दिलों के फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर जमा दे।"

(यह सत्य पर दृढ़ता की दुआ है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अधिकांश दुआ यही होती थी)

5

«اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهِ عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ، مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ أَعْلَمْ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهِ، عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ، وَمَا لَمْ أَعْلَمْ، اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ ﷺ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَاذَ مِنْهُ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ، اللهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ عَمَلٍ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ عَمَلٍ، وَأَسْأَلُكَ أَنْ تَجْعَلَ كُلَّ قَضَاءٍ تَقْضِيهِ لِي خَيْرًا»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुका मिनल् ख़ैरि कुल्लिहि, आ'जिलिहि व आजिलिहि, मा अलिम्तु मिन्हु, वमा लम् आ'लम, व अऊज़ो बिका मिनश्-शर्रि कुल्लिहि, आ'जिलिहि व आजिलिहि, मा अलिम्तु मिन्हु, वमा लम् आ'लम, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुका मिन् ख़ैरि मा स-अ-लका अब्दुका व नबिय्युका मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, व-अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मा आज़ा मिन्हु अब्दुका व नबिय्युका, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुका अल्-जन्नह वमा क़र्रबा इलैहा मिन् क़ौलिन औ अमल, व-अऊज़ो बिका मिनन्-नारि वमा क़र्रबा इलैहा मिन् क़ौलिन औ अमल, व अस्-अलुका अन् तज्अला कुल्ला क़ज़ाइन तक़ज़ीहे ली ख़ैरा”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे लोक और परलोक की प्रत्येक भलाई माँगता हूँ, जो मुझे मालूम है और

जो मैं नहीं जानता हूँ। तथा मैं लोक और परलोक की प्रत्येक बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ, जो मुझे मालूम है और जो मैं नहीं जानता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उस भलाई का प्रश्न करता हूँ जो तेरे बंदे और पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुझसे माँगी है, और मैं उस बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ जिससे तेरे दास और पैगंबर ने शरण माँगी है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत और उससे क़रीब कर देनेवाले कथन और कर्म का सवाल करता हूँ, तथा मैं जहन्नम और उससे क़रीब कर देनेवाले कथन और कर्म से तेरी शरण चाहता हूँ। और मैं तुझसे प्रश्न करता हूँ कि हर वह चीज़ जिसका तू मेरे लिए फैसला करता है, उसे बेहतर बना दे।"

(यह व्यापक और परिपूर्ण दुआओं में से है)

6

«يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ، أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، وَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ»

"या ह़य्यु या क़य्यूमु बि-रह़मतिका अस्तग़ीसु, असलिह़् ली शा'नी कुल्लहू वला तकिल्नी इला नफ्सी तर्फता ऐन"

“ऐ परम जीवित सब कुछ थामने वाले! मैं तेरी ही दया से फरयाद करता हूँ, तू मेरे संपूर्ण काम सुधार दे और आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर।”

(यह वेदना और चिंता की दुआ है।)

7

«اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ ابْنُ عَبْدِكَ ابْنُ أَمَتِكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَنُورَ بَصَرِي وَجِلَاءَ حُزْنِي وَذَهَابَ هَمِّي»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुका, इब्नो अब्दिका, इब्नो अ-म-तिक, नासियती बि-यदिक, माज़िन फिय्या हुक्मुक, अद्लुन फिय्या क़ज़ाउक, अस्-अलुका बि-कुल्लिसमिन हुवा लक, सम्मैता बिहि नफ्सक, औ अंज़ल्तहु फी किताबिक,

औ अल्लम्तहु अ-ह-दन् मिन् खल्क़िक, अविस्ता´सर्ता बिहि फी इल्मिल ग़ैबि इन्दक, अन् तज्अ़लल् क़ुरआना रबीअ़ा क़ल्बी, व नूरा ब-स-री, व जलाआ हुज़्नी, व ज़हाबा हम्मी"

"ऐ अल्लाह! मैं तेरा दास हूँ, तेरे दास का बेटा, तेरी दासी का बेटा हूँ। मेरी पेशानी तेरे हाथ में है, मेरे ऊपर तेरा आदेश चलता है, मेरे बारे में तेरा फैसला न्यायपूर्ण है। मैं तुझसे तेरे हर उस नाम के द्वारा प्रश्न करता हूँ जिससे तूने अपने आपको नामित किया है, या तूने उसे अपनी किताब में उतारा है, या तूने उसे अपनी मख्लूक़ में से किसी को सिखाया है, या उसे अपने पास प्रोक्ष ज्ञान में सुरक्षित रखा है, कि तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरी आँखों की रोशनी, मेरे दुःख का निवारण और मेरी चिंता का मोचन बना दे।"

(यह चिंता और दुःख की दुआ है)

8

«اللَّهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا، وَأَنْتَ
تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَهْلًا إِذَا شِئْتَ»

“अल्लाहुम्मा ला सह्ला इल्ला मा जअल्तहू सह्ला, व अन्ता तज्अलुल-ह़ज़्ना सह्लन इज़ा शे'ता”

“ऐ अल्लाह! कोई काम आसान नहीं परंतु जिसे तू आसान कर दे, और यदि तू चाहे तो मुश्किल् को आसान कर दे।”

(यह मामलों को मुश्किल हो जाने पर आसान बनाने की दुआ है)

9

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْهُدَى وَالتُّقَى، وَالْعَفَافَ وَالْغِنَى»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल-हुदा वत्तुक़ा, वल-अफ़ाफ़ा वल-ग़िना"

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मार्गदर्शन, परहेज़गारी, हराम से पवित्रता और (अल्लाह के अलावा से) बेनियाज़ी माँगता हूँ।"

10

«اللَّهُمَّ اهْدِنِي، وَسَدِّدْنِي»

"अल्लाहुम्मह्-दिनी, व सद्दिद्नी"

"ऐ अल्लाह! मुझे सत्य का मार्गदर्शन प्रदान कर और मुझे सीधे मार्ग पर लगा दे।"

11

«اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِي الَّذِي هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِي، وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِي، وَأَصْلِحْ لِي آخِرَتِي الَّتِي فِيهَا مَعَادِي، وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ، وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِي مِنْ كُلِّ شَرٍّ»

"अल्लाहुम्मा अस्लिह़् ली दीनी अल्लज़ी हुवा इस्मतो अम्री, व-अस्लिह़् ली दुन्याया अल्लती फीहा मआशी, व-अस्लिह़् ली आख़िरती अल्लती फीहा मआदी, वज्-अलिल् ह़याता ज़ियादतन ली फी कुल्लि ख़ैर, वज-अलिल-मौता राह़तन ली मिन् कुल्लि शर्र"

"ऐ अल्लाह मेरे लिए मेरे धर्म को सुधार दे जो कि मेरे मामले का बचाव है, और मेरे लिए मेरी दुनिया को सुधार दे जिसके अन्दर मेरी जीविका (रहन—सहन) है, और मेरे लिए मेरी आख़िरत (परलोक) को सुधार दे जिसकी ओर मुझे लौटना है, और मेरे लिए जीवन को प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे, तथा मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक बुराई से मुक्ति का कारण बना दे।"

12

«اللَّهُمَّ إِنَّكَ عُفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي»

“अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल-अफ़्वा, फ़ा'फु अन्नी”

“ऐ अल्लाह! तू अत्यंत क्षमा और माफ़ी वाला है, और क्षमा करने को पसंद करता है। अतः तू मुझे क्षमा और माफी प्रदान कर।”

13

«اللَّهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا يَحُولُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ، وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتَكَ، وَمِنَ الْيَقِينِ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مُصِيبَاتِ الدُّنْيَا، وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا، وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا، وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا، وَانْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا، وَلاَ تَجْعَلْ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا، وَلاَ تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنَا وَلاَ مَبْلَغَ عِلْمِنَا، وَلاَ تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لاَ يَرْحَمُنَا»

“अल्लाहुम्मक़्-सिम् लना मिन् ख़श्यतिका मा तहूलो बैनना व बैना मआसीका, वमिन् ताअतिका मा तुबल्लिग़ुना बिहि जन्नतका, वमिनल-यक़ीनि मा तुहव्विनो अलैना मसाईबद्दुन्या, अल्लाहुम्मा अम्ते’ना बि-अस्माएना, व अब्सारिना, व क़ुव्वतिना मा अह़्यय्तना, वज्-अल्हुल-वारिसा मिन्ना, वज्-अल सा’रना अला मन् ज़-ल-मना, वन्सुर्ना अला मन आदाना, वला तज्-अल मुसीबतना फी दीनिना, वला तज्-अलिद्दुन्या अक्सरा हम्मिना, वला मब्लग़ा इल्मिना, वला तुसल्लित् अलैना मन् ला यर्-ह़मुना”

“ऐ अल्लाह! तू हमें अपने डर का इतना अंश प्रदान कर, जो हमारे और तेरी अवज्ञाओं के बीच बाधा बन जाए, और अपनी आज्ञाकारिता का इतना हिस्सा प्रदान कर जिसके कारण तू हमें

अपनी जन्नत तक पहुँचा दे, और हमें इतना यक़ीन (दृढ़ विश्वास) प्रदान कर जिससे तू हमपर दुनिया की विपत्तियों को आसान कर दे। ऐ अल्लाह! तू जब तक हमें जीवित रख, हमें अपने कानों, अपनी आँखों और अपनी शक्ति से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान कर, और इस (लाभ उठाने) को हमारा वारिस (अर्थात् हमारी मृत्यु के बाद तक बाक़ी रहने वाला) बना, और हमारा बदला (प्रतिशोध) उससे ले जो हमपर अत्याचार करे, और जो हमसे दुश्मनी करे उसपर हमें विजय प्रदान कर, और हमारी विपत्ति (दुर्भाग्य) हमारे धर्म में न बना, और दुनिया को हमारी सबसे बड़ी चिंता और हमारे ज्ञान का अंत (लक्ष्य) न बना, और हम पर किसी ऐसे व्यक्ति को प्रभुत्व प्रदान न कर, जो हम पर दया न करे।"

14

«رَبِّ أَعِنِّي وَلاَ تُعِنْ عَلَيَّ، وَانْصُرْنِي وَلاَ تَنْصُرْ عَلَيَّ، وَامْكُرْ لِي وَلاَ تَمْكُرْ عَلَيَّ، وَاهْدِنِي وَيَسِّرِ الهُدَى لِي، وَانْصُرْنِي عَلَى مَنْ بَغَى عَلَيَّ، رَبِّ اجْعَلْنِي لَكَ شَكَّارًا، لَكَ ذَكَّارًا، لَكَ رَهَّابًا، لَكَ مِطْوَاعًا، لَكَ مُخْبِتًا، إِلَيْكَ أَوَّاهًا مُنِيبًا، رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِي، وَاغْسِلْ حَوْبَتِي، وَأَجِبْ دَعْوَتِي، وَثَبِّتْ حُجَّتِي، وَسَدِّدْ لِسَانِي، وَاهْدِ قَلْبِي، وَاسْلُلْ سَخِيمَةَ صَدْرِي».

“रब्बि अ-इन्नी वला तुइन् अलय्या, वन्सुर्नी वला तन्सुर अलय्या, वमकुर् ली वला तम-कुर

अलय्या, वह्दिनी व-यस्सिरिल-हुदा ली, वन्सुर्नी अला मन् बग़ा अलय्या, रब्बिज-अल्नी लका शक्कारा, लका ज़क्कारा, लका रह्हाबा, लका मित्वाआ, लका मुख़्बिता, इलैका अव्वाहम्-मुनीबा, रब्बि तक़ब्बल तौबती, वग़्सिल ह़ौबती, व-अजिब दा'वती, व सब्बित हुज्जती, सद्दिद् लिसानी, वह्दि क़ल्बी, वस्लुल सख़ीमता सद्री"

"ऐ मेरे पालनहार! मेरी मदद कर और मेरे विरुद्ध (किसी की) मदद न कर, और मेरा समर्थन कर और मेरे विरुद्ध किसी का समर्थन न कर, और मेरे लिए उपाय कर (योजना बना) और मेरे विरुद्ध किसी के उपाय (योजना) को सफल न होने दे, और मेरा मार्गदर्शन कर और मार्गदर्शन को मेरे लिए आसान कर दे, और उस व्यक्ति के विरुद्ध मेरी सहायता कर जो मुझ पर

अत्याचार करे। ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपना बहुत आभारी, अपना बहुत अधिक ज़िक्र करने वाला, अपना बहुत डरने वाला, अपना आज्ञाकारी, अपना विनम्र और समर्पित, बहुत रोने-गिड़गिड़ाने वाला तथा अपनी ओर बहुत लौटने वाला और पश्चाताप करने वाला बंदा बना ले। ऐ मेरे पालनहार! मेरी तौबा स्वीकार कर, मेरे पाप धो दे, मेरी दुआ क़बूल कर, मेरे तर्क (प्रमाण) को स्थापित (सुदृढ़) कर दे, मेरी ज़बान को सीधी (दुरुस्त) कर दे, मेरे दिल का मार्गदर्शन कर और मेरे दिल से ईर्ष्या और कपट को बाहर निकाल दे।”

15

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الخَيْرَاتِ، وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ، وَحُبَّ الْمَسَاكِينِ، وَأَنْ تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي، وَإِذَا أَرَدْتَ فِتْنَةً فِي قَوْمٍ فَتَوَفَّنِي غَيْرَ مَفْتُونٍ، وَأَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ، وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ إِلَى حُبِّكَ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका फे’लल-ख़ैराति, व तर्कल-मुन्कराति, व हुब्बल मसाकीनि, व-अन् तग़फ़िरा ली व-तर-ह-मनी, व-इज़ा अरद्ता फ़ित्नतन फ़ी क़ौमिन फ़-तवफ़्फ़नी ग़ैरा मफ़्तूनिन, व-अस्अलुका हुब्बका व हुब्बा मन् युहिब्बुका, व हुब्बा अमलिन युक़र्रिबो इला हुब्बिका”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अच्छे कामों के करने, बुरे कामों के त्यागने और मिस्कीनों (ग़रीबों) से प्यार करने का सामर्थ्य माँगता हूँ, और यह कि तू मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर, और जब किसी समुदाय को परीक्षा में डालना चाहे, तो मुझे परीक्षा में डाले बिना मृत्यु दे दे। तथा मैं तुझसे तेरे प्रेम, और तुझसे प्रेम करने वाले के प्रेम और उस कार्य के प्रेम का प्रश्न करता हूँ, जो तेरे प्रेम से क़रीब करने वाला है।”

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दुआओं के बारे में फरमाया : ये सत्य हैं। इसलिए इनका अध्ययन करो और इन्हें सीखो)

16

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الْأَمْرِ، وَالْعَزِيمَةَ عَلَى الرُّشْدِ، وَأَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ، وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ، وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ قَلْبًا سَلِيمًا، وَلِسَانًا صَادِقًا، وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ، إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकस्-सबाता फिल-अम्र, वल-अज़ीमता अलर्-रुश्द, व-अस्अलुका मूजिबाति रह्मतिक, व-अज़ाइमा मग़्-

फिरतिक, व-अस्अलुका शुक्रा ने'मतिक, व-हुस्ना इबादतिक, व-अस्अलुका क़ल्बन सलीमा, व-लिसानन सादिक़ा, व-अस्अलुका मिन ख़ैरि मा ता'लम, व-अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मा ता'लम, व-अस्तग़फ़िरुका लिमा ता'लम, इन्नका अन्ता अल्लामुल-ग़ुयूब"

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे धर्म में स्थिरता और संमार्ग पर दृढ़ता (का सामर्थ्य) माँगता हूँ। तथा मैं तुझसे तेरी दया के कारणों और तेरी क्षमा को सुनिश्चित करने वाले कर्मों एवं कथनों का सवाल करता हूँ। मैं तुझसे तेरी नेमत का धन्यवाद करने और तेरी अच्छे ढंग से उपासना करने का सामर्थ्य माँगता हूँ। मैं तुझसे शुद्ध हृदय और सच्ची ज़बान का सवाल करता हूँ। मैं तुझसे वह भलाई माँगता हूँ, जो तू जानता और उस बुराई

से तेरी शरण चाहता हूँ जो तेरे ज्ञान में है, तथा मैं तुझसे उन सभी पापों के लिए क्षमा याचना करता हूँ, जिन्हें तू जानता है। निःसंदेह तू प्रोक्ष (ग़ैब की) बातों का जानने वाला है।"

(हदीस में है कि ये (शब्द) सोने और चाँदी के ख़ज़ाने से बेहतर हैं)

17

«اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ، وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ، إِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ، إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ، وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ»

अल्लाहुम्मह-दिनी फी मन् हदैत, व आफिनी फी मन् आफैत, व त-वल्लनी फी मन् तवल्लैत, व बारिक ली फी मा आ'तैत, व क़िनी शर्रा मा क़ज़ैत, इन्नका तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अलैक, इन्नहू ला यज़िल्लो मन् वालैत, वला य-इज़्ज़ो मन् आदैत, तबारक्ता रब्बना व-तआलैत

“ऐ अल्लाह! मुझे मार्गदर्शन प्रदान करके उन लोगों में शामिल कर, जिन्हें तूने मार्गदर्शन प्रदान किया है, और मुझे आफ़ियत देकर उन लोगों के समूह में शामिल कर, जिन्हें तूने आफियत प्रदान की है, तथा उन लोगों के साथ मेरा भी संरक्षक (कार्यसाधक) बन जा जिनका तू संरक्षक (कार्यसाधक) बना है, और जो कुछ तूने प्रदान किया है उसमें मुझे बरकत (वृद्धि) प्रदान कर, और मुझे उस बुराई से सुरक्षित रख जिसका तूने फैसला किया है। निश्चय तू ही फैसला करता और तेरे ख़िलाफ़ कोई फैसला नहीं कर सकता। निश्चित रूप से, वह अपमानित नही हो सकता जिसका तू संरक्षक बन गया, तथा वह कभी भी सम्मानित नहीं हो सकता जिससे तू दुश्मनी रखे। ऐ हमारे पालनहार! तू बरकत (बहुत भलाई) वाला और सर्वोच्च है।”

18

«اللَّهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ، وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ، أَحْيِنِي مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِي، وَتَوَفَّنِي إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِي، وَأَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، وَكَلِمَةَ الْإِخْلَاصِ فِي الرِّضَا وَالْغَضَبِ، وَأَسْأَلُكَ نَعِيمًا لَا يَنْفَدُ، وَقُرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقَطِعُ، وَأَسْأَلُكَ الرِّضَاءَ بِالْقَضَاءِ، وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَلَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ، وَالشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ، وَفِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ، اللَّهُمَّ زَيِّنَّا بِزِينَةِ الْإِيمَانِ، وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُهْتَدِينَ»

“अल्लाहुम्मा बि-इल्मिकल ग़ैबा, व क़ुद्रतिका अलल-ख़ल्क़ि, अह्यिनी मा अलिम्तल ह़याता ख़ैरन ली, व-तवफ़्फ़नी इज़ा अलिम्तल वफ़ाता ख़ैरन ली, व-अस्अलुका ख़श्यतका फिल-ग़ैबि वश्शहादति, व-कलिमतल इख़्लासि फ़िर्रिज़ा वल-ग़ज़बि, व-अस्अलुका नईमन् ला यन्फ़दु, व-क़ुर्रता ऐनिन ला तन्क़तिओ, व-अस्अलुकर्रिज़ाआ बिल-क़ज़ाए, व-बर्दल-ऐशि बा'दल-मौति, व लज़्ज़तन-नज़्रि इला वज्हिका, वश्शौक़ा इला लिक़ाइका, व-अऊज़ु बिका मिन ज़र्राआ मुज़िर्रतिन, व-फ़ित्नतिन मुज़िल्लतिन, अल्लाहुम्मा ज़ैयिन्ना बि-ज़ीनतिल-ईमान, वज्-अल्ना हुदातन् मुह्तदीन”

“ऐ अल्लाह! मैं तेरे ग़ैब (प्रोक्ष) को जानने और मख़्लूक़ पर तेरी क्षमता के माध्यम से सवाल करता हूँ कि मुझे उस समय तक जीवित रख

जब तक तू जीवन को मेरे लिए बेहतर जाने, और मुझे उस समय मृत्यु दे दे जब मृत्यु को मेरे लिए बेहतर जाने। मैं तुझसे प्रोक्ष और प्रत्यक्ष में तेरे भय का तथा प्रसन्नता और क्रोध में सत्य बात कहने का सवाल करता हूँ, और मैं तुझसे ऐसी नेमत का सवाल करता हूँ जो कभी खत्म न हो, और मैं तुझसे आँखों की ऐसी ठंडक माँगता हूँ जो बाधित न हो, और मैं तुझसे तेरे फैसले पर संतुष्टि, मृत्यु के बाद सुखद जीवन, तेरे चेहरे की ओर देखने का आनंद और तुझसे मिलने की लालसा का सवाल करता हूँ। और मैं हानिकारक विपत्ति (दुर्भाग्य) और भ्रामक फित्ने (परीक्षण) से तेरी शरण लेता हूँ। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की शोभा से सुसज्जित कर दे और हमें मार्गदर्शित मार्गदर्शक बना दे।"

19

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اللَّهُمَّ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي، وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल आफ़ियह, फ़िद्दुन्या वल-आख़िरह, अलाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल अफ़्वा वल आफ़ियह फ़ी दीनी व दुन्याया व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्-तुर औराती व आमिन रौआती, अल्लाहुम्मह्-फ़ज़्नी

मिन् बैने यदय्या, व मिन् ख़ल्फ़ी, व अन् यमीनी, व अन् शिमाली, व मिन् फ़ौक़ी, व अऊज़ो बि-अज़मतिका अन् उग़ताला मिन् तह्ती"

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत (सुरक्षा) का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे क्षमा और अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने धन में आफ़ियत (सुरक्षा) का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दे वाली चीज़ों (खामियों) पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को सुकून (शांति) में बदल दे। ऐ अल्लाह! मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दाएँ से, मेरे बाएँ से तथा मेरे ऊपर से मेरी ह़िफ़ाज़त कर, और मैं इस बात से तेरी अ़ज़मत (महानता) की शरण लेता हूँ कि अचानक अपने नीचे से विनष्ट कर दिया जाऊँ।"

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

अल्लाह का शरण लेने की नबवी दुआएँ

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

1

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَشَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मा अमिल्तु व शर्रि मा लम् आ’मल्”

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ उस काम की बुराई से जो मैंने किया और उसकी बुराई से जो मैंने नहीं किया।”

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ अक्सर किया करते थे)

2

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका अन् उश्रिका बिका व अना आ›लम, व अस्तग़फिरूका लिमा ला आ›लम”

“ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी शरण में आता हूँ कि मैं जानबूझ कर तेरे साथ शिर्क करूँ, और मैं उस चीज़ से तेरी क्षमा चाहता हूँ जिसे मैं नहीं जानता।”

(यह दुआ रियाकारी – दिखावा - समाप्त कर देती है)

3

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ، وَجَمِيعِ سَخَطِكَ»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् ज़वालि ने'मतिक, व तह्व्वुलि आफ़ियतिक, व फ़ुजाअति निक़मतिक, व जमीए सख़तिक"

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी नेमत के छिन जाने, तेरी आफ़ियत के बदल जाने, अचानक तेरे अज़ाब के आने और तेरे हर प्रकार के क्रोध से तेरी शरण में आता हूँ।"

4

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الأَخْلاَقِ، وَالأَعْمَالِ، وَالأَهْوَاءِ، وَالْأَدْوَاءِ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् मुन्करातिल अख़्लाक़ि, वल-आमालि, वल-अह्वाए, वल-अद्वाए”

“ऐ अल्लाह! मैं बुरी आदतों, बुरे कामों, बुरी इच्छाओं और बुरी बीमारियों से तेरी शरण लेता हूँ।”

5

«اللَّهمَّ إنِّي أَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ البَلاَءِ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ القَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् जह्दिल बलाए, व दरकिश्शक़ाए, व सूअल-क़ज़ाए, व शमाततिल आ’दाए”

“ऐ अल्लाह! मैं विपत्ति (परीक्षण) के कष्ट, दुर्भाग्य से पीड़ित होने, बुरी क़ज़ा (बुरे फैसले) और दुश्मनों के खुश होने से तेरी शरण लेता हूँ।”

6

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ، وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ، وَالْبُخْلِ، وَالْهَرَمِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا، وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا، أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल-अज्ज़ि, वल-क-सलि, वल-जुब्नि, वल-बुख़्लि, वल-हरमि, व अज़ाबल-क़ब्रि। अल्लाहुम्मा आति नफ़्सी तक़्वाहा, व ज़क्किहा अन्ता ख़ैरु

मन् ज़क्काहा, अन्ता वलिय्युहा व मौलाहा, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् इल्मिन ला यन्फ़ओ, व मिन क़ल्बिन ला यख़्शओ, व मिन नफ़्सिन ला तश्बओ, व मिन दा'वतिन ला युस्तजाबु लहा"

"ऐ अल्लाह! मैं विवशता (बे-बसी), आलस्य, कायरता, कंजूसी, बुढ़ापा और क़ब्र की यातना से तेरी शरण लेता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी आत्मा को परहेज़गारी प्रदान कर और उसे पवित्र कर दे, तू ही उसको बेहतर पवित्र करने वाला है, तू ही उसका संरक्षक और स्वामी है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ ऐसे ज्ञान से जो उपयोगी नहीं है, और ऐसे दिल से जो डरता नहीं है, और ऐसी आत्मा से जो संतुष्ट नहीं होती है और ऐसी दुआ से जो क़बूल नहीं की जाती।"

7

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الهَمِّ وَالحَزَنِ، وَالعَجْزِ وَالكَسَلِ، وَالبُخْلِ وَالجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल् हम्मि वल-ह-ज़नि, वल-अज्ज़ि वल-क-सलि, वल-बुख़्लि वल-जुब्नि, व ज़-ल-इद्दैनि, व-ग़लबतिर्रिजालि”

“ऐ अल्लाह! मैं चिंता, दुःख, विवशता (बे-बसी), आलस्य, कंजूसी, कायरता, ऋण (क़र्ज़) के बोझ और लोगों के अनाधिकार वर्चस्व (ग़लबा) से तेरी शरण लेता हूँ।”

8

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِي، وَمِنْ شَرِّ بَصَرِي، وَمِنْ شَرِّ لِسَانِي، وَمِنْ شَرِّ قَلْبِي، وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّي»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् शर्रि सम्ई, वमिन् शर्रि बसरी, वमिन् शर्रि लिसानी, वमिन् शर्रि क़ल्बी, वमिन् शर्रि मनिय्यी”

“ऐ अल्लाह! मैं अपने कान की बुराई से, अपनी आँख की बुराई से, अपनी ज़बान की बुराई से, अपने दिल की बुराई से और अपने वीर्य (गुप्तांग) की बुराई से, तेरी शरण लेता हूँ।”

9

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْغِنَى، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् फ़ित्नतिन्नारि व-मिन अज़ाबिन्नार, व अऊज़ो बिका मिन् फ़ित्नतिल क़ब्र, व-अऊज़ो बिका मिन् अज़ाबिल-क़ब्र, व-अऊज़ो बिका मिन् फ़ित्नतिल ग़िना, व-अऊज़ो बिका मिन् फ़ित्नतिल फ़क़्र, व-अऊज़ो बिका मिन फ़ित्नतिल मसीहिद्-दज्जाल”

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ जहन्नम के फ़ित्ने (परीक्षण) से और जहन्नम की यातना से, तथा मैं तेरी शरण लेता हूँ क़ब्र के फ़ित्ने (परीक्षण) से और तेरी शरण लेता हूँ क़ब्र की यातना से, तथा मैं तेरी शरण चाहता हूँ मालदारी के फ़ित्ने (परीक्षण) से। और मैं तेरी शरण में आता हूँ ग़रीबी के फ़ित्ने (परीक्षण) से। तथा मैं तेरी पनाह माँगता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ित्ने (परीक्षण) से।”

10

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَنْ تُضِلَّنِي، أَنْتَ الْحَيُّ الَّذِي لَا يَمُوتُ، وَالْجِنُّ وَالْإِنْسُ يَمُوتُونَ»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बि-इज़्ज़तिका, ला इलाहा इल्ला अन्ता, अन् तुज़िल्लनी, अन्तल ह़य्युल-लज़ी ला यमूतो, वल-जिन्नु वल-इन्सु यमूतून”

“ऐ अल्लाह! मैं तेरे प्रभुत्व की शरण में आता हूँ, तेरे अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं, इस बात से कि तू मुझे पथभ्रष्ट कर दे। तू वह परम जीवित है जो कभी नहीं मरता, तथा जिन्न और पुरुष मर जाते हैं।”

11

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ، وَالْجُنُونِ، وَالْجُذَامِ، وَمِنْ سَيِّئِ الْأَسْقَامِ»

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल-बरसि, वल-जुनूनि, वल-जुज़ामि, व मिन्-सैयेइल्-अस्क़ामि

“ऐ अल्लाह! मैं बर्स, पागलपन, कोढ़ (कुष्ठ) और समस्त बुरी बीमारियों से तेरी शरण लेता हूँ।”

12

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ يَوْمِ السَّوْءِ، وَمِنْ لَيْلَةِ السَّوْءِ، وَمِنْ سَاعَةِ السَّوْءِ، وَمِنْ صَاحِبِ السَّوْءِ، وَمِنْ جَارِ السَّوْءِ فِي دَارِ الْمُقَامَةِ»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् यौमिस्सूए, व मिन् लैलतिस्सूए, व मिन् साअतिस्सूए, व मिन् साहिबस्सूए, व मिन् जारिस्सूए फी दारिल-मुक़ामति"

"ऐ अल्लाह! मैं बुरे दिन से, बुरी रात से, बुरी घड़ी से, बुरे साथी से और निवास स्थान में बुरे पड़ोसी (अर्थात् निवासी पड़ोसी की बुराइयों) से तेरी शरण चाहता हूँ।"

13

«أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْفِتَنِ، مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ»

“अऊज़ो बिल्लाहि मिनल-फ़ितन, मा ज़-ह-रा मिन्हा वमा बतन”

“मैं खुले और छिपे फ़ित्नों (परीक्षण) से अल्लाह की शरण लेता हूँ।”

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

रुक़्या (झाड़-फूँक) की दुआएँ

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

1

7 बार सूरतुल-फातिहा पढ़ना

﴿أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، بِسْمِ
ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝١ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ
ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٢ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝٣ مَٰلِكِ يَوْمِ
ٱلدِّينِ ۝٤ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝٥
ٱهْدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ۝٦ صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ
أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ ٱلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا ٱلضَّآلِّينَ ۝٧﴾ [الفاتحة:١-٧]

मैं अल्लाह की शरण में आता हूँ धिक्कारे हुए शैतान से।

शुरू अल्लाह के नाम से जो असीम दयावान्,

अत्यंत दयालु है।

“सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सर्व संसार का पालनहार है। असीम दयावान्, अत्यंत दयालु है। बदले के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं। हमें सीधे मार्ग पर चला। उन लोगों का मार्ग जिनपर तूने अनुग्रह किया, उन लोगों का (मार्ग) नहीं जिनपर प्रकोप अवतिरत हुआ और न पथभ्रष्टों का।”

2

एक बार आयतुल कुर्सी पढ़ना

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ
سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي
ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ
يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ
بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ
ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَاۚ وَهُوَ
ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ٢٥٥﴾ [البقرة: ٢٥٥]

“अल्लाह ही सच्चा पूज्य है, जिसके अलावा कोई पूज्य नहीं, जो परम जीवित, सब का थामने वाला है, जिसे न ऊँघ आए न नींद, उसी के

स्वामित्व में है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके पास सिफारिश कर सके, वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो उनके पीछे है और वे उसके ज्ञान में से किसी चीज़ को घेरे में नहीं ला सकते, परंतु वह जितना चाहे। उसकी कुर्सी के विस्तार ने आकाशों और धरती को घेर रखा है, वह (अल्लाह) उनकी हिफाज़त से न थकता है और न ऊबता है, वह तो सर्वोच्च और बहुत महान है।" [सूरतुल-बक़रह : 255]

3

सूरतुल इख़्लास और मुऔवज़तैन यानी सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास पढ़ना, फिर दोनों हथेलियों में फूँककर दर्द की जगह पर फेरना, और ऐसा 3 बार करें।

﴿قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ٢ لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُولَدۡ ٣ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ ٤﴾ [سورة الإخلاص]

“(ऐ रसूल!) आप कह दीजिए : वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है। और न कोई उसका समकक्ष है।”

﴿قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلۡفَلَقِ ١ مِن شَرِّ مَا
خَلَقَ ٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ٣ وَمِن
شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي ٱلۡعُقَدِ ٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ
إِذَا حَسَدَ ٥﴾ [سورة الفلق]

“(ऐ नबी!) कह दीजिए : मैं सुबह के पालनहार की शरण लेता हूँ। उस चीज़ की बुराई से, जो उसने पैदा की। तथा अंधेरी रात की बुराई से, जब वह छा जाए। तथा गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से। तथा ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जब वह ईर्ष्या करे।”

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢
إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ ۝٤
ٱلَّذِى يُوَسْوِسُ فِى صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ
ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ۝٦﴾ [سورة الناس]

“(ऐ नबी!) कह दीजिए : मैं शरण लेता हूँ लोगों के पालनहार की। लोगों के बादशाह की। लोगों के सत्य पूज्य की। वसवसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले की बुराई से। जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है। जिन्नों और इनसानों में से।”

4

«اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهِبِ البَاسَ، اشْفِ أَنْتَ الشَّافِي، لاَ شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ، شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا»

अल्लाहुम्मा रब्बन्नास, अज़्हिबिल्बास वश्फ़ि अन्तश्शाफ़ी, ला शिफ़ाआ इल्ला शिफ़ाउक्, शिफ़ाअन् ला युग़ादिरो सक़मा

“ऐ अल्लाह, लोगों के पालनहार! कष्ट (बीमारी) को दूर कर दे, और आरोग्य प्रदान कर, तू ही आरोग्य प्रदान करने वाला है, तेरे आरोग्य के अलावा कोई आरोग्य नहीं, ऐसा आरोग्य (स्वास्थ्य) प्रदान कर कि कोई बीमारी बाक़ी न रहे।”

(वह दर्द या रोगी पर अपना दाहिना हाथ फेरे और यह दुआ पढ़े)

5

«بِسْمِ اللّٰهِ، تُرْبَةُ أَرْضِنَا، بِرِيقَةِ بَعْضِنَا، يُشْفَى سَقِيمُنَا، بِإِذْنِ رَبِّنَا»

"बिस्मिल्लाह, तुर्बतो अर्ज़िना, बि-रीक़ति बा'ज़िना, युश्फ़ा सक़ीमुना, बि-इज़्नि रब्बिना"

"अल्लाह के नाम से, हमारी भूमि की मिट्टी, हम में से किसी की थूक के साथ, इससे ठीक हो जाए हमारा बीमार, हमारे पालनहार की आज्ञा से।"

(वह अपनी थूक को अपनी उंगली पर लगाए, फिर उसे मिट्टी पर डाले, फिर उसके साथ दर्द या घाव की जगह पर फेरे और यह दुआ पढ़े)

6

«بِاسْمِ اللهِ» «أَعُوذُ بِاللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ»

“बिस्मिल्लाह” “अऊज़ो बि-इज़्ज़तिल्लाहि व क़ुद्रतिही मिन् शर्रि मा अजिदो व उहाज़िरो”

“अल्लाह के नाम से” “मैं अल्लाह और उसकी शक्ति की शरण लेता हूँ उस चीज़ की बुराई से जो (दर्द) मैं महसूस करता हूँ और जिस (बीमारी) से (भविष्य में) डरता हूँ।”

(वह दर्द की जगह पर अपना हाथ रखे और 3 बार «بسم الله» “बिस्मिल्लाह” कहे, फिर 7 बार कहे :

«أَعُوذُ بِاللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ».

“अऊज़ो बि-इज़्ज़तिल्लाहि व क़ुद्रतिही मिन् शर्रि मा अजिदो व उहाज़िरो”)

7

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ»

“अऊज़ो बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्मह, मिन् कुल्लि शैतानिन् व हाम्मह, व मिन कुल्लि ऐनिन् लाम्मह”

“मैं अल्लाह के परिपूर्ण शब्दों (यानी उसके सुंदर नामों एवं सर्वोच्च विशेषताओं) के द्वारा शरण लेता हूँ हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर नुक़सान पहुँचाने वाली बुरी नज़र से।”

8

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ»

“अऊज़ो बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक़”

“मैं अल्लाह के परिपूर्ण शब्दों (यानी उसके सुंदर नामों एवं सर्वोच्च विशेषताओं) के द्वारा शरण लेता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जिसे उसने पैदा किया है।

9

«بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ، فِي الْأَرْضِ، وَلَا فِي السَّمَاءِ، وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ»

“बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रो मअ़स्मिहि शैउन् फ़िल् अर्ज़ि वला फ़िस्समाए, व हुवस्स-मीउल् अ़लीम”

“मैं अल्लाह की शरण चाहता हूँ जिसके महान नाम के उल्लेख के साथ धरती और आकाश में कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।”

(इसे तीन बार पढ़े)

10

«بِاسْمِ اللهِ أَرْقِيكَ، مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ، مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ، اللهُ يَشْفِيكَ بِاسْمِ اللهِ أَرْقِيكَ»

"बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक, मिन् कुल्लि शैइन् यू'ज़ीक, व मिन् शर्रि कुल्लि नफ़्सिन् औ ऐनि ह़ासिदिन्, अल्लाहु यश्फ़ीक, बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक"

"मैं अल्लाह के नाम से तुझ पर दम (झाड़-फूँक) करता हूँ हर उस चीज़ से जो तुझे कष्ट पहुँचाती है, हर आत्मा की बुराई या ईर्ष्या करने वाले की आँख (बुरी नज़र) से, अल्लाह तुझे शिफा दे, मैं अल्लाह के नाम से तुझ पर दम करता हूँ।"

11

«أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ»

"अस्-अलुल्लाहल अज़ीम, रब्बल अर्शिल अज़ीम, अन् यश्फियका"

"मैं महान सिंहासन (अर्श) के मालिक महामहिम अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें निरोग (स्वस्थ) कर दे।"

(इसे 7 बार पढ़े, और यदि वह खुद पर पढ़ना चाहे, तो 7 बार "अस्-अलुल्लाहल अज़ीम, रब्बल अर्शिल अज़ीम, अन् यश्फियनी" कहे।)

रुक़्या (झाड़-फूँक) में कुछ शर्तों और चेतावनियों का ध्यान रखना चाहिए, जो ये हैं :

1

रुक़्या क़ुरआन और सुन्नत से प्रमाणित हो, तथा वह अपनी विधि और अपने शब्दों में शिर्क, बिद्अतों और निषिद्ध चीज़ों से दूर हो।

2

मुसलमान अपने पालनहार से संबंधित हो और उस पर भरोसा रखे, तथा इस बात को अच्छी तरह से जान ले कि रुक़्या का प्रभाव केवल अल्लाह सर्वशक्तिमान की अनुमति से होता है।

3

उसे अनुभव करने के रूप में रुक़्या नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे इसके प्रभाव पर ईमान (दृढ़ विश्वास) रखना चाहिए। अतः रुक़्या करने वाले को और जिसपर रुक़्या किया जा रहा है, दोनों को रुक़्या के प्रभाव और उसके द्वारा ठीक होने पर ईमान (विश्वास) रखना चाहिए।

4

क़ुरआन करीम की सभी आयतें शिफा (आरोग्य) हैं। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फरमाया :

﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ ٱلْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ﴾ [الإسراء:٨٢]

“और हम क़ुरआन में से जो उतारते हैं, वह

ईमान वालों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) तथा दया है।" (सूरतुल-इसरा : 82), परंतु जिसके बारे में वर्णित है कि वह रुक़्या है, उसके द्वारा रुक़्या करना सर्वोचित है।

5

"रोगी के लिए अपना रुक़्या स्वयं करना बेहतर है। क्योंकि यह उसके लिए अधिक लाभकारी है और अपने पालनहार के सामने अपनी ग़रीबी और ज़रूरत को प्रकट करने में अधिक सच्चाई का पात्र है, क्योंकि दिल की उपस्थिति और इरादे की शुद्धि का रुक़्या पर प्रभाव पड़ता है।

صحيح الدعاء والثناء على الله تعالى

सुबह और शाम की दुआएँ

अगला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

1

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

“ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल्-मुल्कु व लहुल्-ह़म्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर”

“अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। उसी का राज्य है और उसी के लिए सब प्रशंसा है और वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिवान है।”

10 बार

2

«أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرِ مَا فِي هَذَا الْيَوم، وَخَيْر مَا بعدِه، وَأَعُوذُ بِك مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذا اليَوم، وَشَر مَا بَعْدِه، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَالْهَرَمِ، وَسُوءِ الْكِبَرِ، وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَعَذَابِ الْقَبْر»

“अस्बह़ना व अस्बह़ल-मुल्कु लिल्लाह़, वल-ह़म्दु लिल्लाह़, ला इलाहा इल-लल्लाहु वह़दहू ला शरीका लहू, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका ख़ैरा मा फी हाज़ल-यौमि, व ख़ैरा मा बा’दिह़, व अऊज़ो बिका मिन शर्रि मा फी हाज़ल-यौमि, व

शर्रि मा बा'दिह, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल क-सलि वल-हरमि व-सूइल-किबर, व फ़ित्नतिद्-दुन्या, व अज़ाबिल-क़ब्र"

हमने सुबह की और अल्लाह के राज्य ने सुबह की, और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस दिन की भलाई और इसके बाद की भलाई माँगता हूँ, तथा मैं तेरी शरण में आता हूँ इस दिन की बुराई से और इसके बाद की बुराई से। ऐ अल्लाह! मैं आलस्य, बुढ़ापे, बुढ़ापे की बुराई (या अहंकार की बुराई), दुनिया के फ़ित्ने (परीक्षण) और क़ब्र की यातना से तेरी शरण लेता हूँ।

यह दुआ सुबह के समय पढ़े

«أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرِ مَا فِي هَذَه اللَّيْلَةِ، وَخَيْرَ مَا بعدِها، وَأَعُوذُ بِك مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذه اللَّيْلَةِ، وَشَر مَا بَعْدِها، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَالْهَرَمِ، وَسُوءِ الْكِبَرِ، وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَعَذَابِ الْقَبْر»

“अम्सैना व अम्सल-मुल्कु लिल्लाह, वल-ह़म्दु लिल्लाह, ला इलाहा इल-लल्लाहु वह़्दहू ला शरीका लहू, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका ख़ैरा मा फी हाज़िहिल्-लैलह, व ख़ैरा मा बा’दिहा, व-अऊज़ो बिका मिन शर्रि मा फी हाज़िहिल्-लैलह, व-शर्रि मा बा’दिहा। अल्लाहुम्मा

इन्नी अऊज़ो बिका मिनल क-सलि वल-हरमि व-सूइल-किबर, व फ़ित्नतिद-दुन्या, व अज़ाबिल-क़ब्र”

हमने शाम की और अल्लाह के राज्य ने शाम की, और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस रात की भलाई और इसके बाद की भलाई माँगता हूँ तथा मैं तेरी शरण चाहता हूँ इस रात की बुराई से और इसके बाद की बुराई से। ऐ अल्लाह! मैं आलस्य, बुढ़ापे, बुढ़ापे की बुराई (या अहंकार की बुराई), दुनिया के फ़ित्ने (परीक्षण) और क़ब्र की यातना से तेरी शरण लेता हूँ।

यह दुआ शाम के समय पढ़े

3

«اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ»

“अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता, खलक़्तनी व अना अब्दुका, व अना अला अहदिका व वा’दिका मस्तता’तु, अऊज़ु बिका मिन् शर्रि मा सना’तु, अबूओ लका बि-ने’मतिका अलय्या, व अबूओ लका बि-ज़ंबी फग़्फ़िर् ली, फ़-इन्नहु ला यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता”

“ऐ अल्लाह तू ही मेरा पालनहार है। तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बंदा हूँ, और मैं अपनी शक्ति भर तुझसे की हुई प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर क़ायम हूँ। मैंने जो कुछ किया उसकी बुराई से तेरी शरण में आता हूँ। मैं अपने ऊपर तेरी नेमत का इक़रार करता हूँ। और मैं तेरे समक्ष अपने गुनाहों को स्वीकार करता हूँ। अतः मुझे क्षमा कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं क्षमा कर सकता।”

4

«اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوتُ، وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ»

"अल्लाहुम्मा बिका अस्बह्ना, व बिका अम्सैना, व बिका नह्या, व बिका नमूतु, व इलैकल-मसीर"

"ऐ अल्लाह! हमने तेरे ही नाम पर सुबह की, और तेरे ही नाम पर हमने शाम की, और तेरे ही नाम पर हम जीते हैं और तेरे ही नाम पर हम मरेंगे। और तेरी ही ओर लौटकर जाना है।"

यह दुआ सुबह के समय पढ़े

«اللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ»

“अल्लाहुम्मा बिका अम्सैना, व बिका अस्बह़्ना, व बिका नह़्या, व बिका नमूतु, व इलैकन्-नुशूर”

“ऐ अल्लाह! हमने तेरे ही नाम पर शाम की, और तेरे ही नाम पर हमने सुबह की, और तेरे ही नाम पर हम जीते हैं और तेरे ही नाम पर हम मरेंगे। और और तेरी ही ओर हमें उठकर जाना है।”

यह दुआ शाम के समय पढ़े

5

«اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا، أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ»

“अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्-समावाति वल-अर्ज़ि, आलिमल-ग़ैबि वश्शहादति, ला इलाहा इल्ला अन्ता, रब्बा कुल्लि शैइन व मलीकहु, अऊज़ु बिका मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किहि, व अन् अक़्तरिफ़ा अला नफ्सी सू-अन, औ अजुर्रहू इला मुस्लिम”

“ऐ अल्लाह! आकाशों और धरती के रचयिता, परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले! तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, हर चीज़ के पालनहार और उसके मालिक! मैं तेरी शरण में आता हूँ अपनी आत्मा की बुराई से और शैतान की बुराई और उसके शिर्क से, और इस बात से कि मैं अपनी आत्मा पर कोई बुराई करूँ, या किसी मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ।”

6

«بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ»

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रो मअ़स्मिहि शैउन् फ़िल् अर्ज़ि वला फ़िस्समाए, व हुवस्स-मीउल् अ़लीम

“मैं अल्लाह की शरण चाहता हूँ जिसके महान नाम के उल्लेख के साथ धरती और आकाश में कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।”

तीन बार

7

«رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا»

“रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा, व बिल-इस्लामि दीना, व बि-मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबिय्या”

“मैं अल्लाह के पालनहार होने पर, इस्लाम के धर्म होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने पर सहमत और संतुष्ट हूँ।”

8

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ، وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي»

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल आफ़ियह, फ़िद्दुन्या वल-आख़िरह, अलाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल् अफ़्वा वल आफ़ियह फ़ी दीनी व दुन्याया व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्-तुर

औराती व आमिन रौआती, अल्लाहुम्मह्-फ़ज़्नी मिन् बैने यदय्या, व मिन् ख़ल्फ़ी, व अन् यमीनी, व अन् शिमाली, व मिन् फ़ौक़ी, व अऊज़ो बि-अज़मतिका अन् उग़ताला मिन् तह्ती”

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत (सुरक्षा) का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे क्षमा और अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने धन में आफ़ियत (सुरक्षा) का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दे वाली चीज़ों (खामियों) पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को सुकून (शांति) में बदल दे। ऐ अल्लाह! मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दाएँ से, मेरे बाएँ से तथा मेरे ऊपर से मेरी ह़िफ़ाज़त कर, और मैं इस बात से तेरी अ़ज़मत (महानता) की शरण लेता हूँ कि अचानक अपने नीचे से विनष्ट कर दिया जाऊँ।”

9

«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ»

“अऊज़ो बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक़”

“मैं अल्लाह के परिपूर्ण शब्दों (यानी उसके सुंदर नामों एवं सर्वोच्च विशेषताओं) के द्वारा शरण लेता हूँ उसकी पैदा की हुई समस्त चीज़ों की बुराई से।”

10

«أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَدِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ -صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- وَمِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا، وَمَا كَانَ مِنْ الْمُشْرِكِينَ»

“अस्बह्ना अला फितरतिल इस्लामि, व कलिमतिल-इख़्लासि, व दीनि नबिय्यिना मुह़म्मदिन – सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - व मिल्लति अबीना इबराहीमा ह़नीफा, वमा काना मिनल-मुश्रिकीन”

“हमने इस्लाम की फ़ितरत (अर्थात् इस्लाम के सच्चे धर्म), इख़्लास के कलिमा (यानी अल्लाह के एकेश्वरवाद के शब्द “ला इलाहा

इल्लल्लाह”), अपने नबी मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - के धर्म और अपने पिता इबराहीम – अलैहिस्सलाम - के पंथ पर सुबह की, जो शिर्क से अलग होकर इस्लाम की ओर एकाग्रचित्त थे, और वह बहुदेववादियों में से न थे।”

इसे सुबह के समय पढ़े

«أَمْسَيْنَا عَلَى فِطْرَةِ الإِسْلاَمِ، وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَدِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- وَمِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا، وَمَا كَانَ مِنْ الْمُشْرِكِينَ»

“अम्सैना अला फितरतिल इस्लामि, व कलिमतिल-इख़्लासि, व दीनि नबिय्यिना मुहम्मदिन – सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - व

मिल्लति अबीना इबराहीमा ह़नीफा, वमा काना मिनल-मुश्रिकीन”

“हमने इस्लाम की फ़ितरत (अर्थात् इस्लाम के सच्चे धर्म), इख़्लास के कलिमा (यानी अल्लाह के एकेश्वरवाद के शब्द “ला इलाहा इल्लल्लाह”), अपने नबी मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - के धर्म और अपने पिता इबराहीम – अलैहिस्सलाम - के पंथ पर शाम की, जो शिर्क से अलग होकर इस्लाम की ओर एकाग्रचित्त थे, और वह बहुदेववादियों में से न थे।”

इसे शाम के समय पढ़े

11

«يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، وَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ»

“या ह़य्यु या क़य्यूमु बि-रह़मतिका अस्तग़ीसु, असलिह़ ली शा’नी कुल्लहू वला तकिलनी इला नफ्सी तर्फ़ता ऐन”

“ऐ परम जीवित, सब कुछ थामने वाले! मैं तेरी दया के माध्यम से मदद माँगता हूँ, तू मेरे संपूर्ण काम सुधार दे और आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर।”

12

«حَسْبِيَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ»

“ह़स्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा, अलैहि तवक्कल्तु, व हुवा रब्बुल-अर्शिल-अज़ीम”

“मेरे लिए अल्लाह ही पर्याप्त है, उसके अलावा कोई पूजा के योग्य नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया और वह महान सिंहासन का मालिक है।”

7 बार

पिछला

पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ

हदीसों का संदर्भ

पहला : अल्लाह की प्रशंसा की हदीसों का हवाला

1 इसे मुस्लिम (600) ने रिवायत किया है।

2 इसे मुस्लिम (477) ने रिवायत किया है।

3 इसे बैहक़ी ने “शुअबुल-ईमान” (4087) में रिवायत किया है और अलबानी ने “सहीह अत-तर्ग़ीब” (1576) में इसे सहीह कहा है।

4 इसे बुखारी (1120), (7442), और मुस्लिम (769) ने रिवायत किया है।

5 इसे मुस्लिम (2713) ने रिवायत किया है।

6 इसे ह़ाकिम ने मुस्तदरक (1920) में रिवायत किया है और अलबानी “अस-सिलसिला” (267) में इसे सहीह कहा है।

7 इसे अबू दाऊद (1493) और तिर्मिज़ी (3475)

ने रिवायत किया है और अलबानी ने "मिश्कातुल-मसाबीह़" (2/708) में इसे सहीह और तिर्मिज़ी ने हसन कहा है।

8 इसे बुखारी (6345) और मुस्लिम (2730) ने रिवायत किया है।

9 इसे अबू दाऊद (1525) और इब्ने माजह (3382) ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे "सहीह अत-तर्गीब वल-तर्हीब" (1824) में सहीह कहा है।

10 इसे मुस्लिम (2696) ने रिवायत किया है।

11 इसे इब्ने माजह (3878) ने रिवायत किया है और अलबानी ने इब्ने माजह की अपनी तख़रीज में इसे सहीह कहा है।

12 इसे मुस्लिम (1218) ने रिवायत किया है।

13 इसे बुखारी (6306) ने रिवायत किया है।

14 इसे अबू दाऊद (1495) और तिर्मिज़ी (3544) ने रिवायत किया है। और अलबानी ने "मिश्कातुल-मसाबीह़" (2/708) में इसे सहीह कहा है।

15 इसे तबरानी ने “अल-मो’जमुल औसत” (7324) में रिवायत किया है। तथा अलबानी ने “अत-तर्ग़ीब” (1839) में इसे सहीह कहा है।

16 इसे अहमद (6/24) और अबू दाऊद (873) ने रिवायत किया है और अलबानी ने “मिश्कातुल-मसाबीह़” (1/192) में इसे सहीह कहा है।

17 इसे अबू दाऊद (874) और नसाई (1069) ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे “सहीह सुनन अन-नसाई” (3/289) में सहीह कहा है।

18 इसे मुस्लिम (601) ने रिवायत किया है।

दूसरा : नमाज़ की दुआओं की हदीसों का हवाला

1 इसे बुखारी (744) और मुस्लिम (598) ने रिवायत किया है।

2 इसे मुस्लिम (770) ने रिवायत किया है।

3 इसे मुस्लिम (771) ने रिवायत किया है।

4 इसे बुखारी (794) और मुस्लिम (484) ने रिवायत किया है।

5 इसे मुस्लिम (486) ने रिवायत किया है।

6 इसे मुस्लिम (483) ने रिवायत किया है।

7 इसे बुखारी (6316) और मुस्लिम (763) ने रिवायत किया है।

8 इसे बुखारी (1377) और मुस्लिम (588) ने रिवायत किया है।

9 इसे अबू दाऊद (1522) और नसाई (1303) ने रिवायत किया है और अलबानी ने "मिश्कातुल-मसाबीह़" (1/299) में इसे सहीह कहा है।

10 इसे मुस्लिम (771) ने रिवायत किया है।

11 इसे बुखारी (798) और मुस्लिम (589) ने रिवायत किया है।

12 इसे अबू दाऊद (792) और इब्ने माजह (910) ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे "सहीह अल-जामिउस-सग़ीर" (1/604) में सहीह कहा है।

13 इसे बुखारी (2822), (6390) ने रिवायत किया है।

14 इसे बुखारी (834) और मुस्लिम (2705) ने रिवायत किया है।

15 इसे ह़ाकिम ने अपनी मुस्तदरक (190) में रिवायत किया है और इसे सहीह कहा है।

16 इसे मुस्लिम (709) ने रिवायत किया है।

तीसरा : नबवी सवालों (दुआओं) की हदीसों का हवाला

1 इसे बुखारी (6389) और मुस्लिम (2690) ने रिवायत किया है।

2 इसे मुस्लिम (2697) ने रिवायत किया है।

3 इसे तिर्मिज़ी (3563) ने रिवायत करके हसन कहा है और अलबानी ने "अस-सहीहा" (1/532) में इसकी इसनाद को हसन कहा है।

4 इसे मुस्लिम (2654) ने रिवायत किया है। लेकिन वाक्यांश : (يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ) "ऐ दिलों के फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर जमा दे।" को तिर्मिज़ी (3522) ने रिवायत किया है और कहा है : "यह एक हसन हदीस है।"

5 इसे अहमद (6/134) और इब्ने माजह (2/1264)

ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे “सहीह अल-जामिउस-सग़ीर” (1/274) में सहीह कहा है।

6 इसे तिर्मिज़ी (3524) ने और “अस-सुनन अल-कुबरा” (9/212) में नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने “सहीहुल-जामि” (5820-1913) में इसे हसन कहा है।

7 इसे अहमद (4318) ने रिवायत किया है, और शैखुल-इस्लाम इब्ने तैमिय्यह और उनके शिष्य इब्नुल-क़ैयिम ने इसे सहीह करार दिया है। देखें : शिफाउल-अलील, पृष्ठ (274).

8 इसे इब्ने हिब्बान (974) ने रिवायत किया है, और अलबानी ने “अस-सहीहा” (2886) में इसे सहीह कहा है।

9 इसे मुस्लिम (2721) ने रिवायत किया है, शैख अस-सा’दी रहिमहुल्लाह ने इस दुआ के बारे में कहा : “यह दुआ सबसे व्यापक और सबसे अधिक लाभकारी दुआओं में से है, और इसमें दीन एवं दुनिया की भलाई का सवाल शामिल है।” बहजतु क़ुलूबिल-अबरार व

क़ुर्रतु उयूनिल-अख़यार, पृष्ठ (205).

10 इसे मुस्लिम (2725) ने रिवायत किया है।

11 इसे मुस्लिम (2720) ने रिवायत किया है।

12 इसे तिर्मिज़ी (3513) ने रिवायत किया और कहा : यह एक हसन व सहीह हदीस है।

13 इसे तिर्मिज़ी (3502) ने और “अस-सुनन् अल-कुबरा” (10161) में नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने “सहीहुल-जामि” (1268) में इसे हसन कहा है।

14 इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और कहा : “यह एक हसन व सहीह हदीस है।”

15 इसे अहमद (22109) और तिर्मिज़ी (3235) ने रिवायत किया और कहा : “यह एक हसन व सहीह हदीस है।”

16 इसे तबरानी ने “अल-मो’जम अल-कबीर” (7135) में रिवायत किया है। और अलबानी ने अस-सहीहा में कहा : “यह एक जैयिद (अच्छी) इसनाद है।”

17 इसे अहमद (1718) और अबू दाऊद (1425) ने रिवायत किया है। और अलबानी ने “मिश्कातुल-मसाबीह़” (1273) में सहीह कहा है।

18 इसे अहमद (18325) और नसाई (1305) ने रिवायत किया है। और अलबानी ने “सहीहुल-जामि” (1301) इसे सहीह कहा है।

19 इसे अबू दाऊद (5074), और “अल-अदबुल-मुफ़रद” (1200) में बुखारी ने रिवायत किया है। और अलबानी ने इसे “सहीह अल-अदबुल-मुफ़रद” (912) में सहीह कहा है।

चौथा : अल्लाह की शरण चाहने वाली नबवी दुआओं का हवाला

1 इसे मुस्लिम (2716) ने रिवायत किया है, तथा सुनन नसाई (5524)

2 इसे बुखारी ने “अल-अदबुल-मुफ़रद” (716) में रिवायत किया है और अलबानी ने इसे “सहीहुल-जामिउस-सगीर” (1/694) में सहीह कहा है।

3 इसे मुस्लिम (2739) ने रिवायत किया है।

4 इसे तिर्मिज़ी (3591), और तबरानी ने "अल-मो'जम अल-कबीर" (36) में रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे "सहीहुल-जामि" (1/278) में सहीह कहा है।

5 इसे बुखारी (6616) और मुस्लिम (2707) ने रिवायत किया है।

6 इसे मुस्लिम (2722) ने रिवायत किया है।

7 इसे बुखारी (2893) ने रिवायत किया है, और मुस्लिम (2706) ने इसका कुछ भाग रिवायत किया है।

8 इसे अबू दाऊद (1551) और तिर्मिज़ी (3492) ने रिवायत किया है, और अलबानी ने "सहीह अल-जामि" (2/811) में इसे सहीह कहा है।

9 इसे बुखारी (6376) और मुस्लिम (589) ने रिवायत किया है।

10 इसे मुस्लिम (2717) ने रिवायत किया है।

11 इसे अबू दाऊद (1554) और नसाई (5493) ने रिवायत किया है, और अलबानी ने "सहीह अल-

जामि" (1/275) में इसे सहीह कहा है।

12 इसे तबरानी ने "अल-मो'जम अल-कबीर" (810) में रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे "सहीह अल-जामि" (1299) में हसन कहा है।

13 इसे अहमद (2667) और मुस्लिम (2867) ने रिवायत किया है।

पाँचवाँ : रुक़्या (झाड़-फूँक) की दुआओं का हवाला

1 इसे बुखारी (5749) और मुस्लिम (2201) ने रिवायत किया है, और "सुनन तिर्मिज़ी (2063) में वर्णित है कि उन्होंने उसे सूरतुल-फातिहा के द्वारा सात बार दम किया।

2 इसे मुस्लिम (810) ने रिवायत किया है, और उसमें वर्णित है कि यह अल्लाह की किताब में सबसे महान आयत है, तथा सहीह बुखारी (2311) में आया है कि यह शैतानों से संरक्षण करती है।

3 इसे बुख़ारी (5735), (5748) और मुस्लिम (2192) ने रिवायत किया है।

4 इसे बुख़ारी (5742), (5743) ने रिवायत किया है।

5 इसे बुख़ारी (5745, 5746) और मुस्लिम (2194) ने रिवायत किया है। नववी की इस हदीस की व्याख्या उनकी पुस्तक "शर्ह मुस्लिम" (14/184) में देखें।

6 इसे मुस्लिम (2202) ने रिवायत किया है।

7 इसे बुख़ारी (3371) ने रिवायत किया है।

8 इसे मुस्लिम (2709) ने रिवायत किया है।

9 इसे अबू दाऊद (5088) और इब्ने माजह (3869) ने रिवायत किया है, और अलबानी ने "मिश्कातुल-मसाबीह" (2391) में इसे सहीह कहा है।

10 इसे मुस्लिम (2186) ने रिवायत किया है।

11 इसे अबू दाऊद (3106) और तिरमिज़ी (2083) ने रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे "सहीह अत-तर्ग़ीब" (3480) में सहीह कहा है।

छठा : सुबह और शाम की दुआओं का हवाला

1 इसे अहमद (8719) ने रिवायत किया है और इब्ने बाज़ रहिमहुल्लाह ने इस हदीस की इसनाद को अपनी पत्रिका (तुहफ़तुल-अख़्यार) में हसन कहा है।

2 इसे मुस्लिम (2723) ने रिवायत किया है।

3 इसे बुखारी (3606) ने रिवायत किया है।

4 इसे अबू दाऊद (5068) और तिर्मिज़ी (3391) ने रिवायत किया है और इब्ने बाज़ ने इसकी इसनाद को सहीह कहा है।

5 इसे अहमद (6597), अबू दाऊद (5067) और तिर्मिज़ी (3529) ने रिवायत किया है और बुखारी ने अल-अदब अल-मुफ़रद में रिवायत किया है और इब्ने बाज़ ने इसे हसन कहा है।

6 इसे अहमद (446) और तिर्मिज़ी (10179) ने रिवायत किया है, और कहा है कि यह हदीस "हसन सहीह" है।

7 इसे अहमद (18967) और तिर्मिज़ी (3389) ने

रिवायत किया है और इब्ने बाज़ ने इसकी इसनाद को हसन कहा है।

8 इसे अहमद ने अल-मुसनद (4785) में रिवायत किया है, तथा अबू दाऊद (5074) ने रिवायत किया है और हाकिम ने इसे सहीह कहा है।

9 इसे अहमद (7898) और तिर्मिज़ी (3437) ने रिवायत किया है और इब्ने बाज़ ने इसकी इसनाद को हसन कहा है।

10 इसे अहमद (21144, 15367) ने रिवायत किया है और इब्ने बाज़ ने इसकी इसनाद को सहीह कहा है।

11 इसे नसाई (10405) और बज़्ज़ार (2/282) ने रिवायत किया है और उन्होंने तथा अलबानी ने "अस-सिलसिला अस-सहीहा" (1/449) में इसे हसन कहा है।

12 इसे अबू दाऊद (5081) ने रिवायत किया है और इसका मौक़ूफ़ होना प्रबल है, और इसका हुक्म मरफ़ूअ हदीस का है जैसा कि अलबानी ने उल्लेख किया है। (देखें : अस-सिलसिला अस-सहीहा 11/449)

العلمية
الوقفية
اقتداء

इक़्तिदा वैज्ञानिक वक़्फ़ फाउंडेशन

हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों और आपके
दैनिक अज़कार एवं दुआओं के प्रकाशन का एहतिमाम करते हैं।

आपका संपर्क करना हमारे लिए सौभाग्य का कारण है :

00966503766222

doa.eqtidaa.com

@eqtidaa1

Download on the App Store

ANDROID APP ON Google play